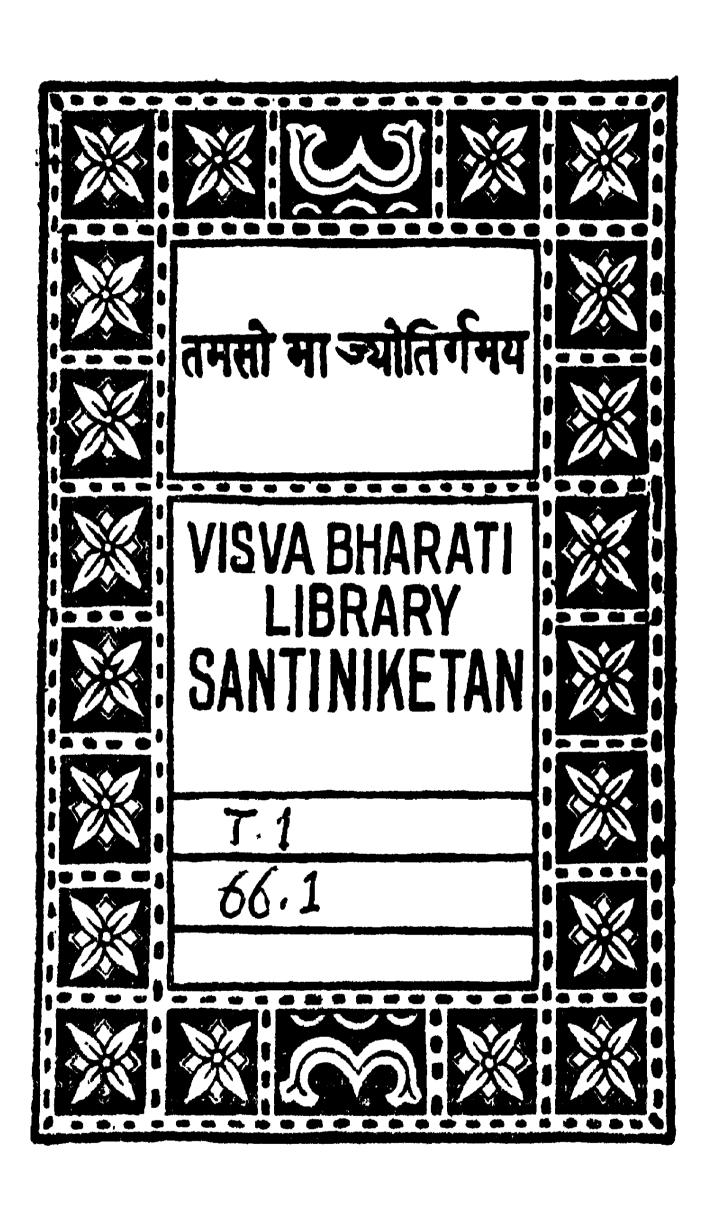
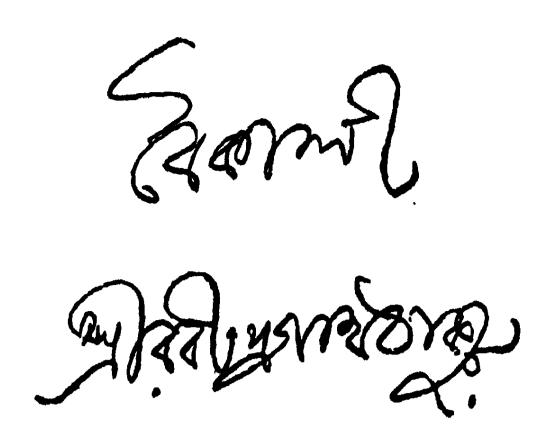
Annaly Mannelong





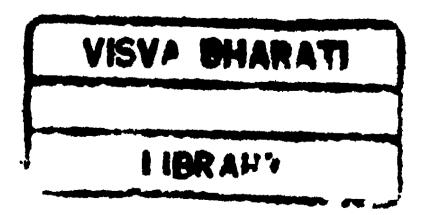


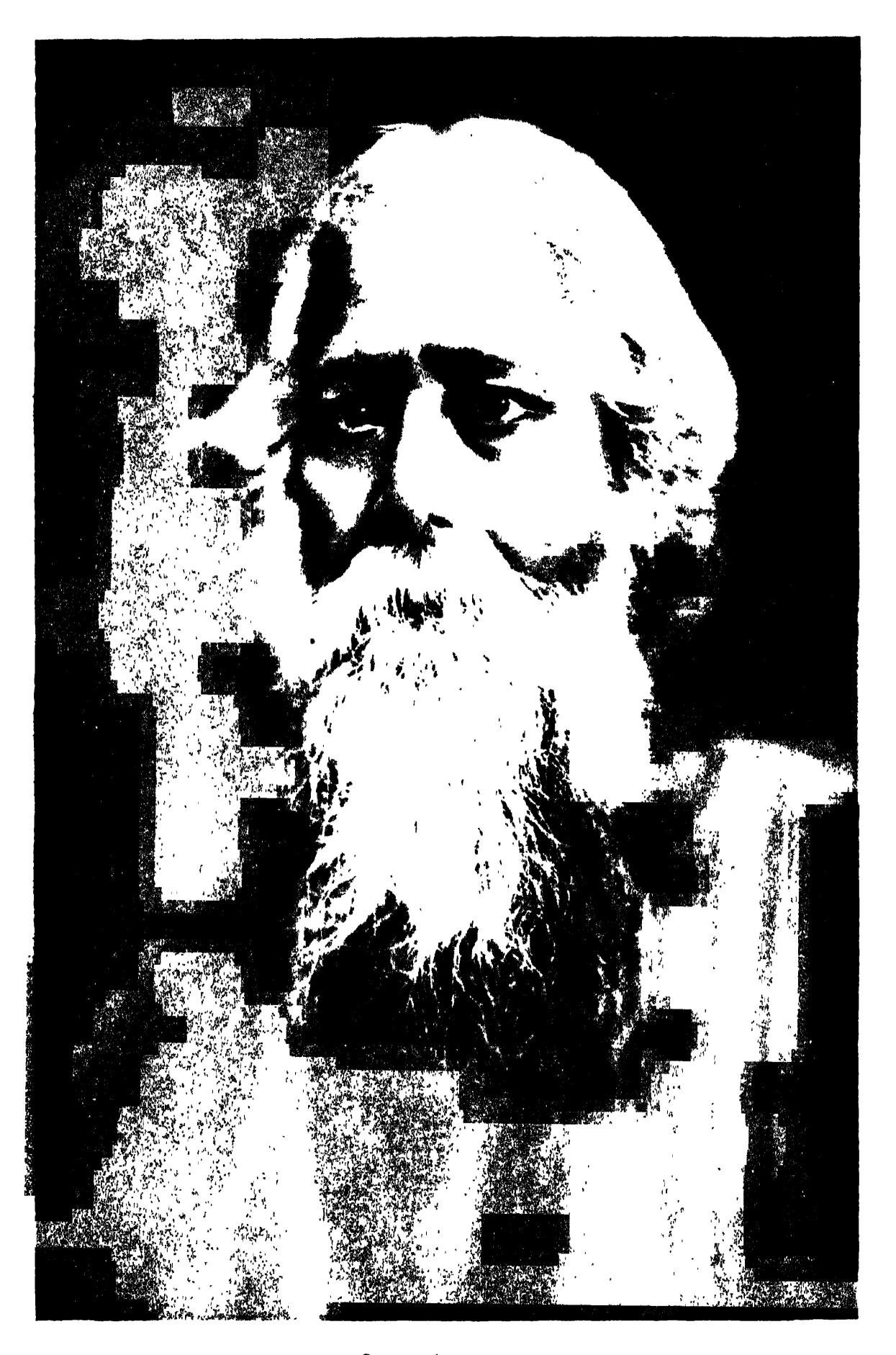
## VISVA-BHARATI LIBRARY



## PRESENTED BY

Y.B.	Publishing dept.
	•





রবীক্তনাথ ঠাকুর। ১৯২৬ শান্তিনিক্তেন আশ্রমিক সংঘের সৌজন্তে

Samono Sand

2000 2000 - Superior

21286A TIBRANI AM (US

कार में कार्य कार

भण्यका नहीं अभन्ति । प्राथमान अभिन्ति हार्से । स्रावहान्य हेन्द्री हेन्से । अक्टालक हेन्द्री हेन्से । अक्टालक हेन्द्री । अक्टालक हेन्द्री ।

Q

अप्रत्य भूक्ष्य क्ष्यां अप्रकृति क्ष्यः ।)
अप्रत्य प्रकृति क्ष्यः क्ष्यः क्ष्यः क्ष्यः अप्रत्यः अप्रत्य

स्टित्य क्रिक्ट क्रांनुका मारहार क्रांनु अमेरिट।। प्राप्त क्रांनुकान ज्याने क्रांनुका क्रांनुका । राष्ट्र प्राप्त क्रांनुकान ज्याने क्रांनुका । राष्ट्र प्राप्तिका श्राप्तिका अभिन क्रांनुका

> उक्त क्षेत्र क्षेत्र । ठिस्स क्षेत्र स्ट्रिस क्षेत्र स्ट्रिस क्ष्या इल्प्स स्थाउन । क्षित्र श्राक्त तेप्स्य क्ष्या क्ष्याक श्राक्त तेप्स्य क्ष्या

अभाव क्षिम अस्त कार्य अभाव क्षिम अस्त अभाव क्षिम अस्ति। क्षिम क्ष्म अस्ति अस्ति क्ष्य अस्ति अस्ति अस्ति अस्ति क्ष्य अस्ति अस्ति अस्ति क्ष्य अस्ति क्ष्म अस्ति अस्ति। क्ष्मि क्ष्य अस्ति अस्ति। BURN OS ASPA INTERD स्ट्रार एक राष्ट्र राष्ट्र MANTE MINT BYO! The Mar Dissolar Die May SKRD BLUE TANK SOM BOUMPOUNT ENDRA CERRAN LAGO OXPANS KNOW DEN BON BON ASTON 1 SALIN MELINER 1 MARS BUNT, ATAIN, SURS WIE HARE TUNK END !! 658N OF 18/8 2MM 200 W- VASS BAVA SVAAN VERNY SAAVAT TAMY WWO'! SWARN AND WANT THINGS O SYDN- COVIN GUND-CANACK

GERRAL CAMPERS 6,

MANCA TEN HONO DIBLASTE, 26 PAR SYCO JASE WAY sma smants 1 ands ever ever ever 397000 JUL JUN 1500 1 क्यांक्य मेर्स स्था अक्स मेरिक।। इन्नर इन पश्चित मेंग्रिस इसस्य एक क्षाक प्राप्त प्रहाद Muser or or see. Els. उद्योष ठभारतील। अस्म राउता अधुक कार्य हार्टि MARAND & WARRAN स्माले मान सम्माल कार हारू। कार्य हार्य सम्माल कार हारू कार्य कार्य कार्य हारू।

मुद्रुठ क्राहा ग्रम क्रिक्स क्राह्म क

अस्त अमेर्न, 'क क्रिला, "
अठावा क्रवाव प्राण्य प्राण्य ।"
क्रवी क्रिक्स खाक्स स्वाविह,
अम्ब अलाकू स्वाविह,
मेर्ने क्रवाव क्रवाव क्रिक्स स्वाविह,
मेर्ने क्रवाव क्रवाव क्रवाविह,
आमा प्राण्य क्रवाविह,
आमा प्राण्य क्रवाविह,

प्रमाद क्रमाद वेस्मा हार है केसी । अहर हा दूर , द्वा है कि क्रमाद केसी । अहर हा दूर , द्वा है कि कि क्रमाद , अस क्रमार क्रमाद केसी । अस क्रमार क्रमाद केसी । क्रमाद क्रमाद क्रमाद केसी ।

अस्ति अस्ति

auso salar well To arrive armor sign 1 ma saw swam, gar oris parca " Mar was simplement A 2000 2000 200 11 FRIKAMPU NYA अराष्ट्र कार्या व्याप्त ON 10000 473 COM'1 रिया विकार मार्गिया होता है। अवद्याद अपने अभ्यात्री, अत्य भारत भारत भारत भारत हात्य ॥

की क्या है। क्या क्या क्या क्या क्या के Me parten ever sugames! MANT WOMEN DON SOMENT SONT Wisher ron Jours about They must aren some 38 M ME, 250 ME, or or among at aver MAN SMETH FARFAT SMANIS! ELROSS GIR TAW ENT AN BY BOMM, 8MN N & NW SARA WSS 36E1 indras war white make sent, र्मिक होता है। हमा हमा हमा हमा हमा हमा है। कर्राज भारतीनमान 125 JUNENT 2102 88 31/4 11

अभार जिल्ला द्राम हेर्स भारत क्षेत्रक द्रामाय देश अस्ट अभार द्रामा क्षेत्रक क्षेत्रक क्षेत्रक अस्ट अभार द्रामा क्षेत्रक क्षेत्रक क्षेत्रक अस्ट अभार द्रामा क्षेत्रक क्षेत्रक आस्त्र ॥

अभार अग्नर अग्नर प्रकार भूकेर अग्नर अग्नर अग्नर अग्नर भूकेर अग्नर अग्नर अग्नर अग्नर क्रिक अग्नर अग्नर अग्नर क्रिक क्रिक अग्नर अग्नरी खुशाउँड प्रापक।

केम्प्र द्रमा अन्न द्रमा क्रमा क्रम क्रमा क्रमा

क्रिन् रेक्टर क्राक्टर प्रश्न । कार्केर क्राक्टर क्राक्टर प्रथम । कीर्न क्राकट क्राक्टर प्रथम । कीर्न क्राकट क्राक्टर प्रथम । कीर्न क्राकट क्राकट प्रथम । केर्न क्राकट क्राकट प्रथम । कार्केट क्राकट क्राकट ।। किर अरहा अर्कि अरहा तथा प्रिक्र हते; अरहा अर्कि अरहा तथा अरहा है। अरहा अरहा अरहा केरिश केरिश केरिश; अरहा केरिश केरिश केरिश केरिश; कीर अरहा किर अरहा किरहा, अरहा किरहा अरहा किरहा की ?

अग्राम क मार्थ मार्थ क्रिक क्रान्त ? भारत प्रमाद प्रमाद क्रान्त क्रान क्रान्त क्रान्त क्रान्त क्रान्त क्रान्त क्रान्त क्रान्त क्रान of my a ond rome mano 42 MS 175 MB 1 Ma Ethas phines sinemes अर्थित अर्थित अर्थित है कि अर्थित । अर्थित कर हमात्र भग्नम स्थादि जारह अभ्याद अभ्याद मयाका ध्रमं माने माने ME 22003 3(2) ALANS SON MARCAMINA SARW SAGAT POR 1 ever arra or the mon or, ठारे थिए तस्य कार कार राह्मकार , HO ON WONDER DISONA HA WIS ON 2MS 11

अभिता के का ने का निकार भारत ने का का ने का का ने का अवक कार भारती हता कर्मा करार कर गर्मा (अस्ति कर्मा अस्ति । (य अस्ति कर्मा अस्ति ।

भूम अभ्यत्य स्था व्याप हिस्ता क्षण्य हिम्मा ह्यम हिस्ता क्षण्य हिम्मा ह्यम हिस्ता क्षण्य हिम्मा ह्यम अभ्य क्षण्य हिम्मा ह्यम अभ्य क्षण्य स्था हिम्मा अभ्याप्त अभ्याप अभ्याप अभ्याप्त अभ्याप अभ्याप अभ्याप्त अभ्याप अभार हम्म अभार मिता। कार्य भारत हारीय मिता। कार्य भारत हम्मार हम्मा, कार्य भारत हम्मार हम्मा, हम कि अभारत भारत हम्मा इस के अभारत भारत होता।

JOSE JUL ROVICE COUR , अक्षेत्र भागिक्ष Mr (san ma (yaz Er var) Sund File sur Ame ज्ञान क्ष्या क्य was per, 358 1888 prins mer star spry sar! त्या विषय त्या, व्याद हम अवर ॥ ella ene ma mar MY MAN ANS AND AND STOR I MORNING SMANNAT A MINIS JET 1 भार कराम (म क्यूक्स करा) रहेम हा करक अमीम असमा, असी- असम्ब निस् । १ सह कराम - क्यूक्स ।

उत्पर शरम अभी। उत्पर शरम अभी। क्षेत्र केम अभी अभी। क्षेत्र केम केम केम क्षेत्र केम केम केम क्षेत्र केम केम अभी।

३००० शरणव भणा। सम्भा अप्रकार अप्रकार सम्भा अप्रकार सम्भा सम्भा अप्रकार सम्भा

अन्त के प्रमाण्य । अप्रकारक क्ष्माण्य के प्रमाण्य के प्रमाण्य के प्रमाण्य के प्रमाणक के प्रमाणक के प्रमाणक के प्रमाणक के प्रमाणक अभ्यापक के प्रमाणक के प उपम अपन क्ष्मा भारत एका अपन क्ष्मा अपन हत्व प्रथम अपन क्षमा क्षमा कारक प्रथम अपन क्षमा क्षमा कारक प्रथम अपन क्षमा क्षमा कारक अपने अपनिक क्षमा क्षमा कारक

अकर अकर अपन । अक्र क्रिक अपन अपन अक्र क्रिक अपन अपन अक्र क्रिक अपन अपन अक्र क्रिक अपन अपन अक्र क्रिक अपन

अपन प्रमान प्रमान कार महार भाग । अस्तर प्रमान प्रमान कार महाम । अस्तर प्रमान प्रमान कार महाने श्री श्री । अपन प्रमान प्रमान कार महाने श्री श्री । अपन प्रमान कार प्रमान कार ।। अभी केंद्र भारती हैं। अपने केंद्र मेंद्र केंद्र मेंद्र हैं। अपने केंद्र मेंद्र मेंद्र

अवस्त श्रीयाः।।

अवस्त श्रीयाः।।

अवस्त मुक्ताः।

वित्र क्ष्याः प्रमार्गः।

वित्र क्ष्याः भ्रीयाः।

वित्र क्ष्याः।

अस्मित (१३१४ (८ अभीक शरह) ब्रिक्स (१३१४ (८ अभीक शरह) ब्रिक्स अस्मित क्रिक अस्मित ब्रिक्स अस्मित क्रिक क्रिक (८ अमी) ब्रिक्स क्रिक क्रिक (८ अमी) ब्रिक्स क्रिक क्रिक क्रिक क्रिक ब्रिक्स क्रिक क्रिक क्रिक क्रिक ब्रिक्स क्रिक क्रिक क्रिक क्रिक क्रिक ब्रिक्स क्रिक क्रि

मिरम पिर, मिर्डिस कार्त्रः असम सिक्स अस्ट्रिंग्स्ट्र मुख्य मेर्ड स्ट्रास्थ्य, व्याप्त स्ट्रास्य स्ट्रास्थ्य, व्याप्त स्ट्रास न्मिर्धिय नेति कार्या कि कुर्य

अभवनित उत्ह। १८२५ । अस्य अस्ट अस्य अस्ट अस्य भी अस्य अस्थार ।

Met de punt enuc, भी र एक उत्तर प्रमा

MAN ON SUBMENT AND SING SO SON SAND OFFICE SO

AMENTE AMENTE I

हत्व यद्धा प्रमेश हत्या वार्ट त्रवासे क्ष्मी। कार्ट प्रमाण हार ग्रेश्वर अस्ता हार श्रेश्वर भारेंग कार्ट क्ष्मण श्रेश भारेंग कार्ट कार्य श्रेश भी हा हार्ये ।

देशकर-ध्या हर्गहरू भागह भागहर हत्वर करा अक्षेत्र हार्गि कार्यहर भागह भागहर हार्गि कराई अस्ते भागहर हार्गि कराई अस्ते भागहर हार्गि कराई अस्ते भागहर हार्गि कराई।

JAN averso Els 1 MES EN ACMORT Spea arrow sent som BEAMAS STA 11 6213 arene are मार्या कार्या कार्या मार्थित कार्या Bar som monst very som, JAN STOR STOR II JAN STORT STORY STORY JAN STORT STORY JAN STORT STORY JAN STORT STORY स्मिलीक शुक्त हाम भारत " की अंगर, की जगरा। (स कि तिरा पर कि शक्ता) की क्यान, की क्यान। नाम कार्य राजा राज मानिक धार्क मानिक भाषा, CH. BUNGE SUPWERE अरह मारह कारह कार मिन कमन, मिक्मन। eralle of the m ग्रिक निर्धा हिर्देश । MARTE STA SCANO,"

"ME TE MAN HE

SET MES, "SEAR HE,"

EN EN STA SCANO," ma Frma? मिक्यम, मिक्यमे।

भाग्य भाग्य भाग्य १००० ॥ भाग्य भाय

 रे स्ट्रा स्ट्र स्ट्रा स्ट्र स्ट्रा स्ट्रा स्ट्रा स्ट्रा स्ट्रा स्ट्रा स्ट्रा स्ट्रा स्ट्र स्ट्रा स्ट्रा स्ट्रा स्ट्रा स्ट्रा स्ट्रा स्ट्रा स्ट्रा स्ट्रा स्ट्र स्

 भारत सार्थ के स्वास्त्र का स्य

Thousas win exercis of 3 INDANT EVARA! मूल त्या भूष, अनुस्य कार्य Mars Alassa 1 अस्ति भा भारत स्थान स्था पिए- मि: श्राभ कारे जार जाता निक्क स्वीवन। किला भारता कार्य कार्य मार्थि अभ्याम स्टब्स द्वार अभ्याम अग्रिक द्वार्थ भारत कार्क निर्मा कार्का है। VERSY NY PARTS, GONTAS SYNAVES 500 2000 BUNG 85/11 ON A JONE BY SUR!

ONE WAS SUR!

भग्न क्षेत्र क्षेत्र

अप्राचित अप्रका न विवास अप्राचित अप्रकारी देशक विक्रामा अप्रकार समील सीमारी अप्रकार समील सीमारीय कार्य अप्रमा, अप्रकार समील सीमारीय कार्य अप्रमा, अग्रीय के जिल्ला Cours mal y sie vere esse vine 2522 SW 1 भार्यक थ्राध्य न्य श्रमण्ड् 

अम् एम्क, क्रम एम्क, जाने क्रम क्रम, जम्मान क्रम, क्र

क्रिक मार्थ होता । क्रिक मार्थ होता । क्रिक मार्थ होता । क्रिकार स्थाप होता । क्रिकार होता । क्रिकार

अक्षा अक्षा अक्षा अक्षा का अक

SEL MAN DES AND,

SEL MAN DESSE

SEL

अक्रा प्रकार के के क्षा करें! अप अप के क्षा अक्षा करें! अप अप कि क्षा अक्षा करें! अक्षा अक्षा अक्षा अक्षा । some som som som JULE OF ON WHEN IN क्रिक्सिक राज्य शिल ग्राम्यक अग्रह, morons marine mes! ठ्या पड़ ग्रेशक व्हामार्स, अभव क्रार अनक कराक द्वार । selle six estables · May Joan org 2002 Just 3002 2000(2) त्रामा क्राया क्राया के अल्या क मिर्फर्स कर्मर वर्षा । स्मानेक वात्रेश्वीयात्र, JON JON RADINA Mender som was West Jan Ele 32 320 प्रध्य प्रथम विषय प्रमानीय। value exect els 47297 4720 00 000 11

हैं र उपक्ष अस्त अस्त । होते क्या के क्या क्या । हार्य क्या क्या क्या क्या ।

> अक्षा क्रान क्रान्य क्रान्य अक्षान क्रान्य क्रान्य अक्षान क्रान्य क्रान्य

र्शि भारत उत्पत्निक भारतांड भारत रामा हनी रामार मीर्र रामार हेलंगड war sure sure me FARTY MYRAN SANGET munder da de गान्ध्रक कार्या क्षान अभिन अहे मक्क 

LE ARCH REVNERT AS JACH SWEMPS CAPE र्शेष काम अधिक काम कामा ? grave view exercise · Man GB ENTS 11 AND COUNTERED ALLEN यह भ्रमीय केरार प्राप्त MEN WAND DE STATE SKENANAN me refer men GISN THAT 2MAY GYBY WHOM Fratingoll egy who gives old in the contrain अभिक क्षिक भारत। अभी क्षिक क्षिक भारत।

mus self men sum MARCH ANSING MAY
MANNEY
MANNEY AMMA & MISTAT. 5 CAT भागकाकीय जिल्ला कार्या, pur van gar 5m Mr. Frontamil LAN EULE EULE SAL each, plan are small han elle selent निया अवस्य स्था स्था अंद क्राया आर्थ।

Leasure sites of a significant

ENTER FORM SANN भूगम् अभूग्र रमायेश जाता हिक्का MONDE SUMMENT ASA ENERGY ERE WALLS WAS ELLAN, mine a myu. medles arrunger rund de miller mass क्रिक रास र्। क (मिति धाल नर नर हा अक्षा प्रकार अह. ज्ञानक प्र-यम् द्रमार MENS SINST MANS SONS IN A SAME WAS SONS IN MANNE SONS SAME WANNE SONS OF MANNE SONS OF MOYNE WAY BOS ANT, SON MANNE WAS ANT,

MARTE 5 STANIAN ANSON एं किया ए जा भागा ग. Genera Hymno प्रमुक्ति क्षामा WW BAMAS 282333 -Waiss burners मिर्देश्य अवेश्या अविकित ए-एकि । १४४, ashe mulches अवार्षेत्रः रीन्यहार Course coult are arrested mai Course 2751 Atta ALLa mynne manie ग्वश्वाख्य (ग-भारेत्र-तर उन्हार क्षेत्र क्ष

402 2118, 43-CHM/2 42 M 2DE SUM! DALD RIM WARN, TELES RESTRICT Mins sum sus Comme was man ने स्ति का के हिंग अवस्य होस्यान शर्ग मार्क विष् भाउ होता, 283. W. PR. 1821 Was arm le he श्चाम करकाक कार्यामा गरीय इश्मान कामी SPECT ECON GNA Mer en in my ten, MA THE THAT THE EN FIN. Fin 50 dra, CN-54 SBAY WAY AS THEM WERE अभ राम डेविस्स डेविंग।

time vit are vire Coma am/a any I'ES PUR SUMUNE SUMO! and ear amplean Harm wiss. MAYE FRIENDS WINKERE ANS. J. KINGIM असिन कारण द्वारी ME, WE CHEWE EMM! स्मित्र कार इ. ७. भेश वहांकर किए? ज्ञार म्याम्यान प्राप्त अवस्था अवस्था । १००१ मान कार्य कार्या । १००१ मान कार्य कार्या । १००१ मान कार्य कार्या ।

ज्ञाम स्थाम क्ष्राका अवा।। ज्ञाम क्ष्राम क्ष्राका क्ष्राका ज्ञाम ज्ञाम स्थित क्ष्राका क्ष्राका भूम स्थित क्ष्राका

Tree remi

३६. <u>संक्रका</u> क्रिक्स स्टिन का क्रिक्स के क्रिक्स अप्र स्टिन का अप्र स्टिन अप्र वह सप्त सम्म श्रेक्स

THE FIRM TOP ANT THE WAY THE STATE OF ANTI-MAN POR THE WAY THE

उत्त स्थितिं क्रियं ने स्था उत्त स्थितिं क्रियं क्रियं प्रक्ष क्रियं क्रियं उत्तर्भ क्रियं उत्तर्भ क्रियं उत्तर्भ क्रियं उत्तर्भ क्रियं अस्थित क्रियं अस्यित क्रियं अस्थित क्रिय

mass cece स्वारा भागा कामार कामार अवार्त्र भागा कामार अवार्त्र भागा कामार अवार्त्र भागा कामार अवार्त्र भागा कामार अवार्त्र कार्त्र कार्त्र कार्त्रका ।।

Sec.

स्क रेंद प्रमान्त्रभावा। भा क्ष्म क्ष्म क्ष्म क्ष्म क्ष्म र्मेंद्र (याजक क्ष्म) क्षम र्मेंद्र (याजक क्ष्म) क्षम रमेंद्र (याजक क्ष्म) क्षम रमेंद्र (याजक क्ष्म) क्षम रमेंद्र (याजक क्षम) क्षम रमे

भूका के कार्या कर कार्या कार्

ENGALMIA 920C

Steed wasy 11

Reserve to the wife with the waster was the waster was the waster was the waster of the waster was the waster while the waster waster was the waster waster

श्रा (१ १ १ महरूप और १५७. rias arms ar a um Empera SDE BULL alle somme sur sur sur min निन्ति अस्ति, aggerent (or or country all alun 1 The war theren. THE STORE IN WHISTER Even of a market गाउँ जिला उपराश्वर अक्षणांक भाष्य ३७ अक्षण आक्षण की आकुर्यन अवाव अभ्याप अभ्याप ।। भूग १००० विकास ।। भूग ३०००००। भूग १००००। भूग १००००। भूग १००००। भूग १००००।

भारत अहं अंद्र अं

26 260, 245 mish 2000. 26 260, 245 mish 2000. 20 260, 245 mish 2000. 2000. 2000. 2000. 2000. 2000. 2000. 2000. 2000. 2000. 2000. 2000. 2000. 2000. 2000. 2000. 2000. अध्यक्ष भाषा है।। क्षेत्रक स्वरूप भाषा आक्षेत्रक भाषा

क्ष कक जिल्ला कार्य।। क्षात्रक क्षात्रक

त्या ह्या क्ष्य ने क्ष्य मा क्ष्य क्ष्य मा क्ष्य क्ष्

प्रक स्टिश्य क्राणिस स्ट्रिश प्रक नेत्रिक स्थापनी स्ट्रिश रंग ग्रामिक स्थापनी स्ट्रिश

> भूत भूग्रेस भूग्रेस भूग्रेस स्मा भूग्रेस भूग्रेस भूग्रेस भूत भूग्रेस भूग्रेस भूग्रेस भूत भूग्रेस भूग्रेस भूग्रेस

स्य श्रिष्ठ भाग अस्या राज्य भाग भाग भाग भाग भागी भाग भाग भाग भाग

त्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या ।। स्था क्ष्या क्

उपस्पक्ष मक्षका।।

हेप्स पर (उपर स्पेस्पर हेप्स

स्वित्रिक (उपर स्पेस्पर हेप्स

स्पेस्पर्य पर प्रस्ति स्पेस

स्पेस्पर्य केर्ड प्रस्ति प्रस्ति।

स्पेस्पर (उपर स्पेर प्रसेस्पर)

स्वित्र स्पेर (उपर स्पेर स्पेर स्पेरेस)

भूतिक अभूति । भूतिक भूतिक । भूतिक । more see some in a some i

पिर भाजन स्टूर स्पार्ट show are mount, wer inch see the (कार्य शक्सकर)।

or my ma whom sag श्वा आया र्म-१००४ विक विकास 2953 29 bungsi wigh and 11 will also and also say also also also say also also also

अक्रान विभाग अभाग होता । स्थान कार्या कार्या

भारत द्रक्त भारतात मानक भारता माने माने माने माने भारता-भारत माने माने भारता-भारत माने माने

त्राक्षेत्र क्षेत्र क्ष

स्याक मार्क महिला ।। क्रम्पड मार्किस स्थापड़ क्रम्पड मार्किस स्थापड़ क्रम्पड महरूर क्रम्पड़

2953 50 WARA 21/24 स्ट्रा हेंग्र भ्राप्त । स्ट्राप्त भ्राप्त स्ट्राप्त स्ट्राप्त स्ट्राप्त स्ट्राप्त । स्ट्राप्त स

स्था भ्रम्मा अस्थित । स्था अस्था अस

and the wall

उत्पुत्तक विकास कार्य व्याप्त कार्य कार्य

नेह एक हमाने हें नेह प्रश्निक नेहा ने का ने ने हैं। नेह प्रश्निक ने का ने ने हैं। नेह कि ने के ने के ने के ने हैं।

मा प्रकार प्रधार प्रथा

२१ ११ १२ ५१ (४८०) १३ ११) अध्य भिर क्यार यात्रं क्यार म्या। याद्रम् तर्म प्राप्तं कुम्त्रम् स्प्रकं कर्म क्राप्तं कुम्त्रम् स्प्रकं करम क्राप्तं क्यार याद्रे क्राप्तं कुम्तु क्राप्तं क्राप्तं स्प्रकं क्राप्तं हत् रहित प्रतम् क्राप्तं हत्

सरस्थि क्रिया अस्ति श्रामी। भ्रम्भिक क्रिया अस्ति भारत महारे अस्ति अस्ति। भ्रम्भिक क्रिया अस्ति।

28 (2003) 92 E(2004) 94 ता, भेर कारा कारा हुता, में अर्थ कारा कारा हुता, के कारा कारा हुता कारा कारा हुता के कारा अर्थ कारा कारा कारा हुता कारा कारा है कारा कारा है कारा कारा है कारा कारा है कारा ह

THE REST GIVE THE I SEEN SURVER THE SAME WAS THE SAME WAS

२४१२ १४ (अ०१२) ४३ १४(अ४६ स्थान कर क्षा है। स्थान कर कर है। राजा आखा करता अला

स्वार्थात्वर क्षिया भागाः ।। स्वार्थात्वर क्षिया भागाः भागाः स्वार्थात्वर क्षिया भागाः

स्तर के अपने क्ष्मी। अपन क्ष्मी। अपन क्ष्मी। अपन क्ष्मी। अपन क्ष्मी क्ष

क्ष्रभाभ कर इक्ष्रभाभ कर अंग्लंक अग्नाड क्रान्साड (उड्डारं- आडे अन्तादा) भारत प्रांच भारत हाका भारत प्रांच भारत हाका भारत हाला करा हाका भारत हाला करा हाला भारत हाला करा हाला

2 original awar

min 31 onegres enter one with the service of the se

early reconsistern surgeria, ear man n new sing ear where have I ear the consistent of the sign of the consistent of

25 Magnas

स्पिर्याम करें ध्वाम अव रेष्ट्रा। अस्ट्रिक्ट श्वाम प्रांच श्या अस्त क्ष्मी के श्वाच श्वाम हत्य अस्तु के श्वाच क्रांच श्वाम हत्या अस्तु क्षाच क्ष्में क्ष्में।

15/19/ 20 May 188

we ever sure sure and and sure and sure

र्व अस्मिन

१९१२ ७० आस्री १९८०म MAL SUMBLE LESS LING TO SULL STAND BLAND B

answer of and In and one of and In and one of and one of and and of and one of and of another of any of

भूष्यक्ष १९१२ इष्ण्यक्ष इष्ण्यक्ष क्षि eur sur reur mens युष्ट (अक्टाक्ट क्या । विद्रायक उत्पत्त क्राय Tamos 4 non For, अभार कार्र मुद्दे अन्ति असीकर, श्वरात कर्षक व्यान्तिक विकास Owne Strume 11 wa amé vieni Mach mach रण्या माल्य अर्थ ठत्म डाक फिक्क फिक्क Enge seure suur seur खिकार माउ त्याव अंश क्रमक क्रिक भारतः खरी व्यक्त मीनी करेंच उठ पश्चिम भग्ना ॥

>>

११ मध्यस्

मान अग्री माने मि aus nie gie; was with the six lateral Cours exerting; & or owns mass नामा कार्य हिल्ला राज्य माख्य यही प्रमा EUN MEME! गम्भे एक कार्य प्राप्ति भूगी अराक अक्षर प्रकार स्वत्य 23 AM (243 8CM) भिन्न-क्षेत्रण किष्ट्रिक अरुक्टिक एक्सक्टि अप्रीर दिए एउस मिश अक्स्याक्ट क्स्ट्र॥ रक्ष भावकार

383 N2 M2 13. मिति हैं कि मिति, Annos samss sa Martine 1 DE CENTENTY, DE CONCIDAN, Or or mind a now ON HAVEN SAMEN Franka Porces 1 त्रहेश स्थाप क्राप्त क्र क्राप्त क्राप्त क्राप्त क्राप्त क्राप्त क्रा 

म्ब्रुक्स इ. ५.८०%

मिन्द्र प्रथम क्रिक्ट क्रिया क्रिया क्रिक्ट क्रिया क्रिक्ट क्रिया क्रिक्ट क्रिया क्रिक्ट क्रिया क्रिया क्रिक्ट क्रिया क्रिक्ट क्रिया क्र क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया याकाव विन्यह सर्वाह ny va are inque me, रिष्टी राह्म अध्येत पार्ड i son hors son! vila sin amis अभित्र अपार्क विषय । भवन (या केंद्राः ragins ma anna over in when sur " ने ही हिल्म ने हिल्ल " WALLELLE MAKE" SC MARGER

## গ্রন্থপরিচয়

রবীন্দ্রনাথের আয়ুকালে স্বতন্ত্র গীতিকাব্য -রূপে বৈকালীর সহিত পাঠক-সাধারণের পরিচয় ঘটিয়া উঠে নাই। অথচ জানা বায়, বিভিন্ন সময়ে এ বিষয়ে কবির আগ্রহ ছিল। প্রথমতঃ ১৯২৬ সালের মে মাসে (১২ তারিখ। বাংলা ২৯ বৈশাখ ১৩৩৩) কবি বখন অন্তম বার বিদেশ ভ্রমণে বাহির হন তাহার পূর্বেই একখানি খাতায় আহ্নপূর্বিক বৈকালী কাব্য স্বহুন্তে লিখিয়া প্রবাসী-সম্পাদকের উদ্দেশে পাঠাইয়া দেন ও লেখেন:

"বৈকালী" লোকহন্তে পাঠাচ্চি। কালিদাসের চিঠিতে এর বিবরণ পাবেন। ষেমন ইচ্ছা ছাপাবেন। পরে এগুলি বই আকারে বের করব।… ২৯ বৈশাখ ১৩৩৩

> আপনার শ্রীরবীন্দ্রনাথ ঠাকুর<sup>0</sup>

দিতীয়তঃ কবি য়ুরোপে থাকিতে যখন দেখিলেন 'হাতের অক্ষর থেকেই ছাপানো চলে। বিশেষ কালী দিয়ে লিখতে হয় এল্যুমিনিয়মের পাতের উপরে', তখন ষেভাবে লেখনের কবিতিকাগুলি একত্র লিখিয়া প্রচারের ব্যবস্থা করেন (আখ্যাপত্রে স্থান-কালঃ বুডাপেন্ট /২৬ কার্ট্রিক/১০০০), অহুরূপভাবে প রি ব ধি ত বৈকালীর গান-কবিতাগুলি দিতীয়বার পর-পর সাজাইয়া উহার আখ্যাপত্রে লিখিয়া দেন: ১লা অগ্রহায়ণ/১০০০/বেল্গ্রেড্।

<sup>•</sup> प्रहेरा श्रवामी, पाश्विन २०८৮, १ ७६२। मन्नामक श्रीवामानम हार्हेगाधायरक लिथा हिठि। कालिमाम, श्रीकालिमाम नाग।

গ্রন্থপরিচয়ে, উল্লিখিত বৈকালী 'প্রবাসী'-পাণ্ডুলিপি বা পূর্ব-বৈকালী আখ্যায় অভিহিত। শ্রীমতী শাস্তা নাগ উহা বিশ্বভারতীর রবীক্রসদনে দান করিয়াছেন।

১ লেখন ও বৈকালীর উল্লিখিত তারিখ-ছইটি যথাক্রমে ১৯২৬ সালের ১২ ও ১৭ নভেম্বর। অর্থাৎ, লেখন এবং এই বৈকালী লেখায় স্থানগত ব্যবধান ষেমন অল্প, কালগত বিচ্ছেদও তেমন নাই বলিলে চলে। লেখন বা বৈকালী-লিখন অবশ্রুই এক দিনে হয় নাই। বালাটন ফ্যুরেডের আরোগ্যভবন হইতে কবি বেল্গ্রেডে আসেন ১৫ নভেম্বর তারিখে। এই বিদেশ-ভ্রমণের তথা বহু গান-রচনার বিবরণ পাওয়া ষাইবে শ্রীমতী নির্মলকুমারী মহলানবিশ প্রণীত কবির সঙ্গে মুরোপে' (১৩৭৬) গ্রন্থে।

তৃ:খের বিষয়, এই পরিবর্ধিত 'উত্তর-বৈকালী' বা 'নব-বৈকালী'র ই অনেকগুলি পাতা আশাস্করপ ছাপা না হওয়ায়ণ বিনটের পর্যায়ে পড়ে এবং বছ বংসর পরে বৈকালীর আংশিক সংকলন ও স্বল্পমাত্র প্রচার হয় ৭ পৌষ ১৩৫৮ তারিখে (২৩ ডিসেম্বর ১৯৫১), ক্ষীণতর আকারে প্রশ্নপ্রচার ১৩৫৯ ফান্ধনে। ৪ যে বা ষে-সকল গ্রন্থে পত্রসংখ্যা সর্বাধিক, তদম্বায়ী এই পূর্বপ্রচারিত কিন্তু খণ্ডিত বৈকালীর এক স্থচীপত্র পরে দেওয়া গেল; ইহাতে রবীজ্রনাথের স্বহন্তে লেখা পৃষ্ঠাক্ষে অমুমান করা যাইবে কতগুলি পাতা বা কতগুলি রচনা পূর্বাপর নষ্ট হইয়াছে এবং সবগুলি সম্ভবতঃ কিরূপ পারম্পর্যে সাজানো হয়<sup>৫</sup>—

এই নব বৈকালীতে 'প্রবাসী'-পাণ্ডলিপির প্রায় সমৃদয় রচনাই গ্রহণ করা হইয়াছিল এরপ অন্তমানের কারণ পরবর্তী আলোচনায় স্পষ্ট হইবে। প্রবাসী মাসিক পত্রে ১৩৩৩ সনের আষাঢ়-কাতিক ৫ মাসে 'বৈকালী' পর্যায়ে ৩২টি রচনার প্রচার, কিন্তু 'প্রবাসী'-পাণ্ডলিপিতে রচনা ৪১টি। প্রবাসীতে কয়েকটি রচনা 'বৈকালী' পর্যায়ের বাহিরেও ছাপা হয়, কয়েকটি রচনা কষ্টিপাথরে সংকলন করায় দ্বিতীয়বার ছাপা হয়, তাহা পরবর্তী দ্বিতীয় স্ফ্রীপত্রে যথাস্থানে যথাবিধি উল্লিখিত।

এ সম্পর্কে ১১ জান্তুয়ারি ১৯২৭ তারিথে [২৭ পৌষ ১৩৩৩] বলিন হইতে একথানি চিঠিতে প্রশাস্তচন্দ্র মহলানবিশ রবীন্দ্রনাথকে লেখেন: 'কালিতে-লেখা সবগুলোই তালো হ'য়েছে। পেন্সিলে-লেখা অনেকগুলি নই হ'লো। প্রধান কারণ অনেক জায়গায় লেখা তালো ফোটে নি, যথেষ্ট চাপ দিয়ে না লেখায় দাগ বসে নি, তার উপর অতিরিক্ত fixing solution দেওয়ায় দাগ মুছে গেছে। ... ১টা machine আর পুরো সরঞ্জাম (কাগজস্ক) অর্ডার দিয়েছি, আশা ক'রছি ফেব্রুয়ারি মাসের মধ্যেই শাস্তিনিকেতনে পৌছবে…'

বৈকালী গ্রন্থ সম্পূর্ণ না হওয়ার ও কবির আয়ুদ্ধালে প্রচার না হওয়ার কারণ স্পষ্টই বুঝা যাইতেছে। উল্লিখিত হাতের লেখা বা লেখাঙ্কন যথাযথ ছাপাইবার ষন্ত্র / উপকরণ শাস্তিনিকেতনে আদে কি না, ব্যবহারের চেষ্টা হইয়াছিল কি না জানা যায় নাই।

নিবিশেষে সকল প্রতির পত্রসংখ্যা সমান হয় নাই। কতকগুলি পাতা একেবারে নষ্ট হয়; সংরক্ষিত অন্যান্য পাতাও সমান সংখ্যায় পাওয়া যায় নাই।

ক্রমিক সংখ্যা এই তালিকারই কিন্তু উদ্ধৃতিচিহ্ন দিয়া যেগুলি দেখানো হইল, (সেরপ চিহ্ন না দিয়া) নির্দিষ্ট গানের পরে পরে কবি স্বয়ং লেখেন। কবি এই বৈকালীর কোনো কোনো পাতায় কেবল এক পিঠে অঙ্কপাত করেন বাংলায়, কখনো বা ইংরেজিতে।

## ॥১॥ উত্তর-বৈকালী। লেখান্ধন: কার্তিক-অগ্রহায়ণ ১৩৩৩ খণ্ডিতভাবে প্রচার: পৌষ ১৩৫৮ ও ফাল্কন ১৩৫৯

মুক্তিত পৃঠাৰ রচনার স্থান-কাল ক্ৰমিক সংখ্যা স্চনা ১ বৈশাখ ১৩৩৩। শাস্তিনিকেতন '२७'। जाभनात्त्र मित्रा तिनित्त ১ বৈশাথ ১৩৩৩। শাস্তিনিকেতন '২৭'। তুমি কি এসেছ<sup>৬</sup> [২৮। আমার প্রাণে গভীর গোপন ২৯। হার মানালে ভাঙিলে অভিমান ৩০। বাঁধন ছেঁড়ার সাধন হবে 07-03 '৩২'। নিশীথে কি কয়ে গেল<sup>৬</sup> ৭ বৈশাগ ১৩৩৩। শাস্তিনিকেতন ৮ বৈশাথ ১৩৩৩। শাস্তিনিকেতন '৩৩'। পথে যেতে ডেকেছিলে<sup>৬</sup>

নটীর পূজা'র গান বা অন্তর্মপভাবে ভাবিত সমকালীন অন্ত গান কবি একত্র সন্নিবেশের কল্পনা করিবেন (নষ্ট ২ পাতা বা ৪ পৃষ্ঠায় রচনাসংখ্যা ২৮-৩১ ) ইহা অহুমান করা গেলেও নিশ্চিত পারম্পর্য স্থির হয় না এবং ?-চিহ্নিত একটি গান সম্পর্কে কিছু সংশয়ও থাকে। নটীর পূজা'র এই গান আধার-পাণ্ডুলিপিতে সম্পূর্ণ পাওয়া গেলেও, কোণাকুণিভাবে নীল পেন্সিলের একটি রেখায় লাঞ্ছিত, আবার 'প্রবাদী'-পাণ্ডুলিপিতেও স্থান পায় নাই। কিন্তু ইহা যে নটীর পূজা নাটকে প্রথমাবধি প্রযুক্ত অবিম্মরণীয় এক গান ইহাও সত্য, এবং উত্তর-বৈকালী -সংকলনের কালে রবীন্দ্রনাথ মত-পরিবর্তন করেন নাই তাহাই বা কে বলিবে ? লক্ষ্য করিতে হইবে নটীর পূজা'র সর্বশেষ গান ('আমায় ক্ষম হে ক্ষম') উভয় বৈকালীতেই বৰ্জিত হইলেও, তাহার পূর্বপাঠ ('আজি এই মম সকল ব্যাকুল') অস্তত উত্তর-পরিকল্পনার অঙ্গীভূত ( ক্রমিক সংখ্যা ৩৮ / বর্তমান গ্রন্থে '৪৩' )। অর্থাৎ, কবি এ ক্ষেত্রে মত বদলাইয়াছেন বা অবহিত হইয়াছেন— হয়তো ইতঃপূর্বে অনবধানে বাদ গিয়াছিল। অপর পক্ষে 'পরবাসী চলে এসো ঘরে' এই দীর্ঘ কবিতার স্থান-সংকুলান না হইলেও (উত্তর-বৈকালীর পৃষ্ঠাসংখ্যার হিসাবে সেরপই দেখা যায় ), 'প্রবাসী'-পাণ্ডুলিপিতে আরও ৩টি গীতিকবিতা তো আছেই ( পরবর্তী অর্থাৎ দ্বিতীয় স্থচীপত্রে ?-চিহ্নিত ) যাহা উত্তর-বৈকালীর অন্যত্র সংকলনের কথা नम्र, पिथा थाम ना, তাহারই একটি— 'आधारतत नीना', 'হে চিরন্তন', 'মরণ-

৩৪। বনে যদি ফুট্ল কুস্থম	क्षांस्त ১७७२	৩৭
৩৫। এসো আমার ঘরে	क्षांस्त्र ५७७२	৬৮
৩৬। আপনহারা মাতোয়ারা	ফান্তন ১৩৩২	40
৩৭। ওগো জলের রানী	कांब्रन [?] ১७७२	8 • - 8 >
৩৮। আজি এই মম সকল ব্যাকুল [ আ	জি এ নিরালা কুঞ্জে। বরণডালা।	
মহুয়া। ২৫ শ্রাবণ ১৩৩৫	] বৈশাখ ১৩৩০ [ শাস্তিনিকেতন ]	<b>९२-</b> 8७
৩৯। হে মহাজীবন	বৈশাখ ১৩৩৩	88
৪০। সে কোন্ পাগল	৮ দেপ্টেম্বর ১৯২৬। বল্টিক সমুদ্র	8 ¢
৪১। কার চোখের চাওয়ার	৯ সেপ্টেম্বর ১৯২৬। হামুর্গ	85
৪২। রয় ধে কাঙাল	১০ দেপ্টেম্বর ১৯২৬। হাম্ব্র্গ	89
৪৩। ছুটির বাঁশি বাজল যে ঐ	১৭ দেপ্টেম্বর ১৯২৬। ম্যুনিক	86
[৪৪। আকাশ, তোমায় কোন্ রূপে	১৭ সেপ্টেম্বর ১৯২৬। ম্যুনিক	۶۶
৪৫। তোর ভিতরে জাগিয়া কে যে	১৮ সেপ্টেম্বর ১৯২৬। ম্যুনিক	<b>( • ]</b> 9
<ul><li>४७। नारे, नारे ज्य</li></ul>	১৮ সেপ্টেম্বর ১৯২৬। ম্যুনিক	62
৪৭। আমার মৃক্তি গানের স্থরে [ আম	ার মৃক্তি আলোয় আলোয় ]	
	১৯ সেপ্টেম্বর ১৯২৬। স্থার্নর্বর্গ	65
৪৮। সকাল বেলার আলোয়	২০ সেপ্টেম্বর ১৯২৬। ম্যুর্ন্বর্গ	60
৪৯। ভালো লাগার শেষ যে না পাই [	মধুর, তোমার শেষ ষে না পাই ]	
	২১ সেপ্টেম্বর ১৯২৬। স্ট্র্গার্ট	<b>4</b> 8
৫০। চাহিয়া দেখো রসের স্রোতে	২৪ সেপ্টেম্বর ১৯২৬। কল্যোন	a a
৫১। তুমি উষার সোনার বিন্দু	২৪ সেপ্টেম্বর ১৯২৬। কল্যোন	৫৬

সাগরপারে' নটার পূজা'র গীতিগুচ্ছে সাজানো হয় নাই তাহাও বলা যায় না।
নটার পূজা ১৩৩০ বৈশাথের মাসিক বহুমতীতে প্রকাশিত, সেই সূত্রে '২৭',
২৯, ৩০, ৩১, '৩২', '৩৩', ৩৯ সংখ্যা-যুক্ত গানগুলিরও বহুল প্রচার— দ্বিতীয়
স্চীপত্রে মাসিক বহুমতীর ( বৈশাখ ১৩৩৩ ) পৃথগ্ভাবে উল্লেখ করা হইবে না।
নই এক পাতায় পর-পর এই হুটি গান ছিল ইহা অহুমান নয়, প্রত্যায় বলা চলে।
কেননা, রচনার পারম্পর্যে যেমন, তেমনি আধার-পাণ্ড্লিপিতে ও লিপিচিত্রিত
মাসিক বহুমতীতে (গীতান্টক: বৈশাখ ১৩৩৪ ) ইহাদের সন্নিবেশ লক্ষ্য করিলে
অক্তর্মপ কল্পনা করার কোনো কারণ নাই।

<b>e&gt;</b>	আপন গানের টানে, আমার	২৫ সেপ্টেম্বর ১৯২৬। ড্যুসেপ্ডফর্	¢ ·
491	আপ্নি আমার কোন্থানে	৬ অক্টোবর ১৯২৬। বলিন	<b>e</b> b
<b>6</b> 8	ওগো স্থন্দর, একদা কী জানি	১১ অক্টোবর [ ১৯২৬ ] প্রাগ্	63
<b>cc</b>	কোথায় ফিরিস পরম শেষের	১২ অক্টোবর [ ১৯২৬ ] প্রাগ্	৬০
<b>e</b> 5	আকাশে তোর তেমনি আছে	২০ অক্টোবর [১৯২৬] ভিয়েনা	<b>6</b> 2
<b>e</b> 9	পথ এথনো শেষ হল না	২৭ অক্টোবর [১৯২৬] বুডাপেস্ট্	৬২
eb 1	দিনের বেলায় বাঁশি তোমার	৩০ অক্টোবর ১৯২৬। বুডাপেস্ট্	6
1 69	পান্থপাথীর রিক্তকুলায় <sup>৮</sup>	৯ নবেম্বর ১৯২৬। বালাটন ফারুরেড।	
		হানারি	৬৪

৬০। মাঘের বিদায়ক্ষণে [ আশ্রমবালিকা : আশ্রমের হে বালিকা ] ।
১৩ জ্যৈষ্ঠ [ ১৩৩৩। ২৭ মে ১৯২৬ ] রোহিত সাগর ৬৫-৬৮
[৬১। দিনাবসান : বাঁশি যথন থামবে ঘরে ] ২০

২৫ বৈশাথ ১৩৩৩ [৮মে ১৯২৬] শাস্তিনিকেতন ৬৯-৭১ ৬২। তব অমূর্ত্ত বাণী [অরূপ, তোমার বাণী] ২১ নবেম্বর [১৯২৬] বুকারেস্ট্ ৭২ ৬৩। বাঁশি আমি বাজাই নি কি ২৪ নবেম্বর [১৯২৬] ডার্ডানেলিস্ ৭৩

দ গানের পর্যায় শেষ হইয়াছে কল্পনা করিয়া (বস্তুতঃ তাহা হয় নাই ) কবি অতঃপর কিছুকাল পূর্বে রচিত (১৩৩০ বৈশাথে ও জ্যৈষ্ঠে) ২টি কবিতা এই বৈকালীর শেষে সংকলন করিলেন। (উভয়ই অনেক পরে, ১৩৩৯ ভাদ্রে, পরিশেষ কাব্যের অঙ্গীভূত হয়।) তৃংথের বিষয়, বৈকালীর বিরলপ্রচার কোনো কোনো কপিতে 'আশ্রমবালিকা'র সবটা পাওয়া গেলেও, একথানি পাতার অভাবে 'দিনাবসান' কবিতার আমুমানিক ও স্তবক খোওয়া গিয়া কেবল শেষ স্তবক পাওয়া যায় এই বৈকালীতে। বিকালীতে ও পরিশেষ কাব্যে মৃখ্য পাঠভেদ এই ষে, প্রথম ৬ ছত্ত্রের গুচ্ছটি পরবর্তী ৬ ছত্ত্রের সহিত 'ঠাই-বদ্ধল' করিয়াছে।

১০ এই খণ্ডিত বৈকালীতে কেবল শেষ শুবকটি দেখা যায়। মূল রবীন্দ্রপাণ্ড্লিপিতে বিভিন্ন সাময়িক পত্রে ও নৈমিন্তিক পত্রে (জন্মোৎসব-দিবসে শান্তিনিকেতনে লিপিচিত্র-রূপে প্রচারিত) ৫ শুবক থাকিলেও, এ ক্ষেত্রে ৪ শুবক ছিল মনে হয়—পরিশেষ কাব্যেও সেইরূপ। বাদ গিয়াছে পূর্ণান্ধ কবিতার চতুর্থ শুবক। কৌতৃহলের বিষয় এই যে, বৈকালীর 'প্রবাদী' পাণ্ড্লিপিতেও ৪ শুবকের বেশি নাই এবং সে ক্ষেত্রে বাদ দেওয়া হইয়াছে 'সম্পূর্ণ' কবিতার শেষ শুবক। বর্তমান বৈকালীতে সবগুলি শুবকের একত্র সংকলন; এ কবিতার এই রূপও কবি বারংবার

পূর্বপ্রচারিত বৈকালীর উদ্ধিথিত স্থচীপত্রের পরিপ্রক বা অমুপ্রক হিসাবে আরও পূর্বের বৈকালীর ('প্রবাসী'-পাণ্ড্লিপি) "ক্রমিক" সংখ্যা -সহ এক স্থচীপত্র এখানে দেওয়া আবশুক। তাহাতে প্রবাসী মাসিক পত্রে আংশিক প্রকাশের বিষয় ষেমন জানা ষাইবে তেমনি উত্তর-বৈকালীতে আছে বা ছিল বলিয়া ষেগুলি দেখা যা য় অথবা অ য় মা ন ক রা যা য় তাহারও হিসাব মিলিবে বর্তমান তালিকার অবদ্ধ এবং বন্ধনীবদ্ধ সংখ্যার সংকেতে। কেননা, পূর্বসংকলিত স্থচীপত্রের প্রয়োজনীয় সব সংখ্যাই এই স্থচীপত্রে দেখানো হইবে বন্ধনীর মধ্যে। প্রসন্ধক্রমে বলা আবশুক, এই পূর্ব-বৈকালীতে ('প্রবাসী'-পাণ্ড্লিপিতে) রচনার স্থান কাল কোথাও লেখা নাই; তাহা অন্ত স্তত্তে, বিশেষতঃ আধার-পাণ্ড্লিপি দেখিয়া, পরে জানা যাইবে অথবা অমুমান করাও অসম্ভব হইবে না।—

॥ ২ ॥ পূর্ব-বৈকালী বা 'প্রবাসী' পাণ্ডুলিপি। রচনা : মাঘ ১৩৩২ - বৈশাখ ১৩৩৩ অংশতঃ প্রবাসী পত্রে মুদ্রণ : বৈশাখ-কার্ত্তিক ১৩৩৩

সংখ্যা স্ফনা বিশেষ শিরোনাম সাময়িক পত্রে প্রকাশ। পৃষ্ঠাত্ব

- ১। দোলে প্রেমের দোলন চাঁপা। দোল-পূর্ণিমায়। সবুজ পত্র। চৈত্র ১৩৩২। ৫৭০
- २। काश्वत्तत नवीन ष्यानत्म। তদেব। भवूष পতা। हेन्द्र ১७७२। ৫१১
- ৩। অনস্তের বাণী তুমি

[বসস্তের দূতী তুমি। নববধ। ভারতী। চৈত্র ১৩৩২। ৪৬৭। গান। রবি।<sup>১১</sup> চৈত্র [১৩৩২] ৩৮০

### স্বীকার করিয়াছেন।

রবীন্দ্রলেথাঙ্কনে আলোচ্য বৈকালীর আখ্যাপত্রে তারিথ আছে '১লা অগ্রহায়ণ' বা ১৭ নভেম্বর ১৯২৬। মনে করা যাইতে পারে, ঐ সময়ের মধ্যে এই বৈকালীর উদ্দেশে ধাতব পত্রে 'দিনাবসান' কবিতা অবধি লেখা হয় এবং উহাই সংকলনের শেষ রচনা কল্পনা করায় কবি উহার শেষে স্বাক্ষরও করেন। পরে আরও ষে-ছটি গান লিখিয়া দেন তাহার তারিথ যথাক্রমে ২১ ও ২৪। আরও পরের গান হয়তো ধাতুপত্রে লেখার সময় বা স্থযোগ হয় নাই কিন্তু বর্তমান গ্রন্থে সংকলিত।

১১ 'রবি' ত্রিপুরা রাজ্যের ত্রৈমাসিক পত্র, এ ক্ষেত্রে ত্রিপুরান্দ ১৩৩৫। রবি পত্রে ও ভারতী'তে পাঠভেদ অল্পই কিন্তু রচনাকালের নির্দেশ পৃথকৃ—

ভারতী: ২১শে ফান্তন ১৩৩২

व्रवि: ১৮ই कास्त ১७७२

রবীন্দ্রনাথ আগরতলায় সমানিত রাজ-অতিথি-রূপে ছিলেন ১৩৩২ ফাল্কনের ১০-১৪

```
৪। তোমার বীণা আমার মনোমাঝে
 ে। চপল তব নবীন আঁখি তৃটি* প্রবাসী। আযাঢ় ১৩৩৩
            [ভোরের পাথি নবীন আঁথি চ্টি। মুক্তি। মহুয়া: ১৩৩৬] ৪০৩
                                  প্রবাসী। আষাঢ় ১৩৩৩। ৪০৪
 ७। नृপूत বেজে যায়*
 १। निथन তোমার धृनाय হয়েছে* প্রবাসী। ভাদ্র ১৩৩৩। ৭১৫
 ৮। জানি তোমার অজানা নাহি গো* প্রবাসী। আষাঢ় ১৩৩৩
            [ অজানা জীবন বাহিসু। উদ্ঘাত। মহয়া: ১৩৩৬ ] ৪০৪
 २। की फूल यातिल*
                                   প্রবাসী। প্রাবণ ১৩৩৩। ৫৫৭
                                  প্রবাসী। প্রাবণ ১৩৩৩। ৫৫৬
     আমার লতার প্রথম মৃকুল*
১১। কেন রে এতই যাবার ত্রা*
                                  প্রবাসী। ভাদ্র ১৩৩৩। ৭১৭
                                  প্রবাসী। ভাত্র ১৩৩৩। ৭১৬
১२। काँमात मगग जन्न अतः
১৩। বিনা সাজে সাজি*
                                  প্রবাসী। ভাবণ ১৩৩৩। ৫৫৬
১৪। কী পাই নি তারি*
                                  প্রবাসী। ভাত্র ১৩৩৩। ৭১৬
১৫। সেই ভালো সেই ভালো*
                                  প্রবাসী। ভাদ্র ১৩৩৩। ৭১৬
                                  প্রবাসী। ভাদ্র ১৩৩৩। ৭১৫
১৬। অনেক কথা যাও যে ব'লে*
                                  প্রবাসী। ভাদ্র ১৩৩৩। ৭১৬
১৭। দে পড়ে দে আমায় তোরা*
                                  প্রবাসী। শ্রাবণ ১৩৩৩। ৫৫৫
     পাতার ভেলা ভাসাই নীরে*
১৯। এবার এল সময় রে তোর* প্রবাসী। ভাদ্র ১৩৩৩। ৭১৭
[৩৭] ওগো জলের রাণী। জলের রাণী। ভারতী। কার্তিক-অগ্র. ১৩৩২। ২১১
                            প্রবাদী। কষ্টিপাথর: ফারুন ১৩৩২। ৬৮১
                                  প্রবাসী। প্রাবণ ১৩৩৩। ৫৫৫
২০। শেষ বেলাকার শেষের গানে*
                                  প্রবাসী। ভাক্র ১৩৩৩। ৭১৭
२)। वार्थिक घूर्य नयन हूर्य*
২২। এপথে আমি যে*
                                  প্রবাসী। আশ্বিন ১৩৩৩। ৮৫৯
२७। मिन পরে যায় দিন*
```

তারিখে ইহা পূর্বোক্ত ত্রৈমাসিক পত্রে (পৃ ৪৫৯-৪৬৯) জানা যায়: '১০ই ফান্তুন, রাত্রি প্রায় দশ ঘটিকার সময় বিশ্বকবি রবীন্দ্রনাথ কুঞ্জবনপ্রাসাদে পদার্পণ করেন। নার্নালীলা দেখিয়া কবি বড়ই মৃশ্ব হন। নাত্র পর দিন (১৪ই ফান্তুন) দ্বিপ্রহরে কবি রবীন্দ্রনাথ কুঞ্জবন ত্যাগ করিয়া কলিকাতা অভিমূখে যাত্রা করিলেন।' এই কয়দিনে রবীন্দ্রনাথ কোন্ গান রচনা করেন, পরবর্তী ষোড়শ পাদটীকায় আলোচনা করা হইবে।

२८। जनियनी (२ धर्नी\* व्यनिमी। व्यन्ति ১०००। ००७

२৫। वित्रम मिन, वित्रम कांक्र अवामी। आंवन ১৩৩৩

[ विवम मिन, विवन काज। विजयो। मह्या: ১৩৩৬] ३२ ००७

[৩৪] বনে যদি ফুটল কুহুম\* প্রবাসী। আশ্বিন ১৩৩৩। ৮৫৯

[৩৫] এসো আমার ঘরে\* প্রবাসী। আশ্বিন ১৩৩৩। ৮৫**৯** 

[ १ ] আঁধারের লীলা আকাশে আলোক লেথায় লেথায়

[ चाँधारतत नीना चारलात तक वितरक। तवीक्षभाष्ट्रनिभि २१] >७

['७२'] निमीश की करा रान अवामी। जानिन ১७७०। ৮७०

[२৮] षायात প্রাণে গভীর গোপন\* প্রবাসী। প্রাবণ ১৩৩৩। ৫৫৬

১২ বর্তমান তালিকার '[৩৭]' বাদ দিয়া একাদিক্রমে ২৫টি গান কবি উন্তর-বৈকালীর প্রথমাংশের জন্য লিথিয়া দেন, এ অনুমান সংগত; প্রচারিত বৈকালী থণ্ডিত হওয়াতেই '২৬' সংখ্যা হইতে আমাদের দৃষ্টিগোচর। [৩৭] সংখ্যার গানটি স্থানবদল করিয়া পরে গিয়াছে, এক পৃষ্ঠাতেও আবদ্ধ থাকে নাই (পূর্ব-বৈকালীতে এক-পৃষ্ঠা-পরিমিত)। উন্তর-বৈকালীর স্থচনার ১৪ পাতা বা ২৮ পৃষ্ঠা হারাইয়াছে; এই পৃষ্ঠার হিসাবও ঠিক মিলিবে যদি মনে রাখা যায় 'তোমার বীণা' (৪) গানে ২ পৃষ্ঠা এবং 'চপল তব নবীন আঁথি' (৫) গানে ৩ পৃষ্ঠাই লাগিবার কথা। ('প্রবাদী'-পাণ্ডুলিপিতে শেষোক্ত রচনা ঠাস-ভাবে লেখায় ২ পৃষ্ঠা হইয়াছে।)

পূর্ব ও উত্তর উভয় বৈকালীর 'যৌথ সম্পদ' ষদেশে লেখা গান ও কবিতা। সে হিসাবে উত্তর-বৈকালীর ষে-ছটি গান পূর্ব-বৈকালীতে প্রত্যাশিত অথচ নাই, প্রথম স্ফীপত্রে তাহাদের সংখ্যা— '৩৬' ও '৩৮'। দ্বিতীয় স্ফীপত্রে উহাদের স্থান শৃত্য।

\* ৩২টি গান প্রবাসী পত্রে ( আষাঢ়-কার্ভিক ১৩৩৩ ) 'বৈকালী' পর্যায়ে মুদ্রিত। অধিকন্ত ইহার ৩টি গান 'কষ্টিপাথর' অংশে শান্তিনিকেতন পত্র হইতে ( নববর্ষ : বৈশাথ ১৩৩৩ ) পূর্বেই সংকলিত ( জ্যৈষ্ঠ ১৩৩৩ )।

- ? '৩১' সংখ্যায় চিহ্নিত করিয়া কোন্টির নির্দেশ হইতে পারে বলা যায় না। অর্থাং, উত্তর-বৈকালীর নষ্ট হুই পাতায় বা চার পৃষ্ঠায় ২৮-৩০ -সংখ্যক তিনটি গান সম্পর্কে অহুমানের স্থায্যতা থাকিলেও, তাহার বাহিরে আর-একটি সম্পর্কে সংশয় থাকিয়াই যায়। দ্রষ্টব্য প্রথম স্ফুটীপত্রে সংখ্যা '২৮' '? ৩১' এবং ষষ্ঠ পাদটীকার প্রথম অহুচ্ছেদ।
- ১০ শ্রীমতী লীলা মজুমদারের স্বাক্ষরসংগ্রহের থাতায় ৪ ছত্তে প্রথম রচনা ৫ চৈত্র ১০০২ তারিখে। সেইটি গান ও কবিতার বীজরূপ। সেই দিনে অথবা ত্র-এক

[২৯] হার মানালে ভাঙিলে অভিমান\* প্রবাসী। আখিন ১৩৩৩। ৮৬০
কালি কলম। প্রাবণ ১৩৩৩। ২৫৪

[৩০] বাঁধন ছেঁড়ার সাধন হবে\* প্রবাসী। কার্ভিক ১৩৩০। ১

নববর্ষ। শান্তিনিকেতন। বৈশাধ ১৩৩০। ৭০
প্রবাসী। কার্ভিপাথর: প্রাবণ ১৩৩০। ৬২১

['৩৩'] পথে যেতে ডেকেছিলে\* প্রবাসী। কার্ভিক ১৩৩০। ১

নববর্ষ। শান্তিনিকেতন। বৈশাধ ১৩৩০। ৬৯
প্রবাসী। কার্তিন ১৩৩০। ১

নববর্ষ। শান্তিনিকেতন। বৈশাধ ১৩৩০। ৬২১

প্রবাসী। ক্টিপাথর: প্রাবণ ১৩৩০। ৬২১

প্রবাসী। আষাঢ় ১৩৩০। ৪০৪

। নববর্ষ। শান্তিনিকেতন। বৈশাথ ১৩৩০। ৭০

[ ? ] হে চিরন্তন। নববর্ষ। শান্তিনিকেতন। বৈশাথ ১৩৩৩। ৬৯

প্রবাসী। কষ্টিপাথর : শ্রাবণ ১৩৩৩। ৬২১

[?] মরণসাগরপারে\* প্রবাসী। কার্তিক ১৩৩৩। ২ (লিপিচিত্র) উত্তরা। কার্তিক ১৩৩৪। ৯৩

পরবাসী চলে এসো ঘরে। প্রবাসী। প্রবাসী। বৈশাথ ১৩৩৩। ১
[পরিণামে তুইটি গান: পরবাসী চলে এসো ঘরে ইত্যাদি
এসো এসো প্রাণের উৎসবে ইত্যাদি

একটি স্বাক্ষর-কবিতা: কোথা যাবে সে কি জানা নেই ইত্যাদি ]

[৬১] বাঁশি যথন থামবে ঘরে। জন্মোংসবের দিনে। প্রবাসী। জ্যৈষ্ঠ ১৩৩৩। ৩৭৬। কবির কামনা। কল্লোল। জ্যৈষ্ঠ ১৩৩৩। ৭৫

জন্মোৎসবে প্রচারিত লিপিচিত্র: ২৫ বৈশাথ ১৩৩৩/শাস্তিনিকেতন

[৩৯] হে মহাজীবন, হে মহামরণ\* প্রবাসী। কার্তিক ১৩৩৩। ২

দিনের মধ্যে (১২ চৈত্রের পরে নয়) যে গীতিকবিতায় উহার পরিণতি, আধার-পাণ্ডলিপিতে (রবীন্দ্রপাণ্ডলিপি ২৭) তাহা বিচিত্র রেথাজালে ও মসীবিলেপনে অবল্পুপ্রায়। অথচ দেশে থাকিতেই একটি 'গ্রাহ্নপার্চ' লেখা হয় তাহার সাক্ষ্য 'প্রবাসী'-পাণ্ডলিপিতে। বিদেশে উহার আর-এক রূপের উদ্ভব আধার-পাণ্ডলিপিতেই, তাহা পরবর্তী তৃতীয় স্ফলপত্রে পাণ্ডলিপি-পরিগণিত '৪৭' সংখ্যায় ও ২৩-সংখ্যক পাদটীকায় দেখা যাইবে। গীতবিতানে প্রচল গান -রূপে যাহার সংকলন তাহা আরও পরে (ভাজ ১৩৩৫) দেখা দেয় ১২৭-সংখ্যক রবীন্দ্র-পাণ্ডলিপিতে মহয়া কাব্যের পরিকল্পনা-কালে।

পারম্পর্য হবছ একরপ না হইলেও নির্দিষ্ট কাল-সীমার মধ্যে স্বদেশে লেখা একই গান-কবিতার গুচ্ছ পূর্বোত্তর উভয় বৈকালীতে থাকিবার কথা। কিন্তু যে-কোনো কারণে হউক, সে প্রত্যাশার সর্বথা পূরণ হয় না। কেননা—

১ নষ্ট পাতার সংখ্যার সহিত রচনার সংখ্যা মিলাইয়া মনে হয়, পূর্ব-বৈকালীর স্থার্ঘ কবিতা 'পরবাসী চলে এসো ঘরে' (বর্তমান সংকলনে ক্রমিক সংখ্যা ৩৯) উত্তর-বৈকালী'তে দেওয়া হয় নাই এবং আমাদের অমুমানে বর্তমান সংকলনের '৩১' '৩২' '৩৩' (প্রথম তথা দ্বিতীয় স্থচীপত্রের ২৮, ২০, ৩০) দেওয়া হইলেও, নটীর পূজার গীতিগুচ্ছের আমুষক্ষে—

আর রেখো না আঁধারে (পূর্ব-বৈকালীতে নাই)
আঁধারের লীলা
হে চির নৃতন
(দ্বিতীয় স্থচীপত্রে ?-চিহ্নিত)
মরণসাগরপারে

উল্লিখিত চারিটি গানের ঠিক কোন্টি সংকলন করায় উত্তর-বৈকালীতে ৩১ সংখ্যা পূর্ণ হইয়াছিল, তাহাও জানা নাই। একাধিক গানের স্থান ছিল না। '? ৩১' সংখ্যা দিয়া প্রথমটির স্থান দেওয়া হইয়াছে প্রথম স্কচীপত্রে।

- ২ উত্তর-বৈকালীতে থাকিলেও, 'আপনহারা মাতোয়ারা' ও 'আজি এই মম সকল ব্যাকুল' গীতিকবিতা-ছুটি (বর্তমান সংকলনের '৪২' ও '৪৩' কিন্তু উত্তর-বৈকালীতে' '৩৬' ও '৩৮' সংখ্যা) পূর্ব-বৈকালীতে দেওয়া হয় নাই; এজক্সই সংকলিত দ্বিতীয় স্ফীপত্রে পাওয়া যাইবে না।
- ০ বাংলা ১৩৩২ সনের মাঘ শেষ না হইতে 'গুগে। জলের রানী' (সংকলিত উভয় স্ফীপত্রেই সংখ্যা '৩৭' এবং বর্তমান সংকলনে '২০') লেখা হয় এরূপ অন্থমানের কারণ আছে; উহার পুরোগামী গীতিকবিতা না ধরিলেও, রবীন্দ্রনাথের পুরাতন খদড়া-পাণ্ডলিপিতে দেখা যায় উহার পরে, এমন-কি, পূর্বোত্তর বৈকালীতে সংকলিত আরও ঘূটি গানের পরে লেখা হয়—

#### দে যে মনের মান্ত্র কেন তারে ইত্যাদি।

এই গান এবং হ য় তে। ইতঃপূর্বে উল্লিখিত 'আর রেখো না আঁধারে আমায়' নটীর পূজা'র এই গানটি কোনো বৈকালীতে সংকলন করা হয় নাই। একমাত্র অনবধানই ইহার কারণ হইতে পারে।

শ্রীমতী রমা মজুমদার (কর) -সংগৃহীত রবীন্দ্রনাথের যে পুরাতন থসড়া-

পাণ্ডলিপির উল্লেখ এইমাত্র করা হইল, তাহাতে বৈকালীর যে কয়টি গান পর-পর পাওয়া যায় তাহার এক তালিকা এখানেই দেওয়া চলে—

	मःथाः	i	বকালী	পূৰ্ব-বৈকালী	<b>ৰ</b> ৰ্ডমান
>	ওগো জলের রানী		৩৭	99	२०
ર	আপনহারা মাতোয়ারা		৩৬	×	82
9	এসো আমার ঘরে		<b>ve</b>	<b>ve</b>	२৮
8	সে যে মনের মান্ত্র কেন তারে	,	×	×	×
¢	यत्न यि कृहेन क्रूय		<b>७</b> 8	<b>७</b> 8	२१

সমৃদয় বৈকালীর আধার-শ্বরূপ যে রবীক্রপাণ্ডলিপির ( অভিজ্ঞান-সংখ্যা ২৭ ) প্রাসন্ধিক স্চীপত্র পরে দেওয়া ষাইতেছে তাহাতে দেখা ষাইবে, উল্লিখিত গীতপঞ্চকের চতুর্থ বাদ দিয়া চারিটি আছে বিপরীত পারস্পর্যে; এ কারণে এবং তেমন কোনো কাটাকুটি নাই বলিয়াও মনে হয়, সম্ভবতঃ 'কর-পাণ্ডলিপি' হইতেই নকল করা হইয়াছে ( অনবধানে একটি বাদ পড়িয়াছে ? )— ২৭-সংখ্যক রবীক্রপাণ্ডলিপিই উহাদের মূলাধার বা থসড়া-থাতা হইতে পারে না।

২৭-সংখ্যক রবীন্দ্রপাণ্ড্রলিপি পূর্ব উত্তর এবং বর্তমান সকল বৈকালীর আধারপাণ্ড্রলিপি-স্বরূপ এবং অধিকাংশ রচনার খসড়া-খাতাও বটে। সেই পাণ্ড্রলিপিতে
মধ্যে-মধ্যে রচনার তারিথ ষেমন দেওয়া আছে, ১৪ কবিতা-গানের পারস্পর্য হইতেও
রচনাকাল সম্পর্কে স্বস্পষ্ট ধারণা করা যায় (কেবল স্ফটীপত্র-মৃত '২'—'৫'এর পারস্পর্য
উন্টাইয়া লওয়া দরকার কর-পাণ্ড্রলিপির সাক্ষ্য-অন্থ্যায়ী); তাহা ছাড়া অন্থান্থ
স্ত্রে অনেক রচনার স্থনির্দিষ্ট তারিথ জানা যায়— এ বিষয়ে বিশেষ আলোকপাত হয়
শ্রীজনাদিকুমার দন্তিদারের সমকালীন থাতাপত্রে। রবীক্রনাথ ন্তন গান রচনা করিয়াই
তাঁহার 'সকল গানের ভাণ্ডারী' দিনেক্রনাথকে অথবা সমীপস্থ অন্থ কোনো গায়কগুণীকে ডাক দিতেন ওই গান কণ্ঠে ধারণ করিতে; এজন্ম তাঁহাদের সংগৃহীত
রবীক্রপাণ্ড্রলিপিতে বা থাতা-পত্রে যে তারিথ বা যে সময় জানা যায়, সচরাচর তাহা
অন্রাস্ত হইতে দেখা গিয়াছে। শ্রন্ধেয় জনাদিকুমার দন্তিদারের নিকট যে-যে তারিথ
জানা গিয়াছে, পরবর্তী স্ফটীপত্রে তাঁহার নামোল্লেখে বন্ধনী-মধ্যে সেগুলি সংকলন করা
হইবে।—

১৪ পরবর্তী স্থচীপত্তে যে তারিথের অন্ত কোনো স্তত্ত দেওয়া নাই তাহা সব সময়েই পাঙুলিপি ২৭ -ধৃত। স্থচীপত্তের প্রথম সারিতে পাঙুলিপির মুদ্রিত পৃষ্ঠাক্ষের উল্লেখ। পরে পাঙুলিপি-গত পারম্পর্যের গণনা কেবল বৈকালী লইয়া। প্রত্যেক ক্ষেত্রে উদ্ধৃত স্থচনাংশের পাঠ ও বানান পাঙুলিপি-সম্মত।

30

# ॥ ৩॥ রবীন্দ্রপাণ্ড্লিপি ২৭<sup>১</sup> বর্তমান বৈকালী প্রসঙ্গে গান ও কবিতার সামগ্রিক সূচীপত্র

পার্	লিপি	-ধৃত	ৰৰ্ডমান গ্ৰন্থে
পৃষ্ঠা	পার	ষ্পর্য স্থচনা ব্রচনা	ক্ৰমিক সংখ্য
1	>	পরবাসী চলে এসো ঘরে শেষ ২ স্তবকের পূর্বে: ২২ মাঘ ১৩৩২	<b>د</b> ی
4	ર	বনে যদি ফুটল কুম্বম (৪) <sup>১৬</sup> উত্তর-বৈকালী: ফান্ধন ১৩৩২	२१
5	•	এশো আমার ঘরে (৩) তদেব: ফান্তুন ১৩৩২	२৮
6	8	আপনহারা মাতোয়ারা (২) তদেব: ফান্তুন ১৩৩২	83
7	¢	ওগো জলের রাণী (১) <sup>১৬</sup> তদেব: ফান্তন [?]/১৩৩২	२ •
8	৬	দোলে প্রেমের দোলন চাঁপা ১১ ফান্ধন [১৩৩২]	>
10	•	ফাগুনের নবীন আনন্দে ১৫ ফাল্কন ১৩৩২	ર
17	b	অনস্তের বাণী তুমি [ বসস্তের দৃতী তুমি ] রবি/ভারতী: ১৮/২১ ফার	हुन '७२ ७

১৫ শান্তিনিকেতনে রবীক্রসদন-সংগ্রহের এই পাণ্ডলিপি যুলতঃ ১৯২৬ খৃন্টান্দের এক ভারারি; এক-এক তারিথে এক-এক পৃষ্ঠা। রচনার থসড়া-থাতা বলিয়া (ব্যতিক্রম সন্তবতঃ স্থচনার ৫।৬টি গীতিকবিতা, বিশেষতঃ সংখ্যা '২'-'৫' / পৃষ্ঠা '4'-'7') কেবল বৈকালীর গান-কবিতা নয়, অন্য কবিতা, বিশেষতঃ লেখন-উদ্দিষ্ট বহু কবিতিকা (লেখন-বহির্ভূত ও ফুলিঙ্গ-ধৃত কয়েকটি) ইহাতে স্থান লইয়াছে। রচনারিক্ত বা রচনা থাকিলেও মদীবিলেপনে লুপ্তপ্রায় বা প্রচ্ছন্ন এরূপ পৃষ্ঠা ষেমন আছে, ছি ডিয়া ফেলা হইয়াছে এমন পাতার সংখ্যাও নিভাস্ত অল্প নয়। বৈকালী শেষ হওয়ার দঙ্গে সঙ্গো '201', অথবা বর্তমান সংকলন-ধৃত আরও ২টি গান ধরিলে পৃষ্ঠা '203'— বৈকালীর সীমা ), অর্থাৎ ১৯২৬ সনের শেষে দেশে ফিরিয়া, কবি 'নটার পূজা'র নবরূপায়লে মনোনিবেশ করেন; তাহারও পরে 'নটরাজ' নৃত্যগীতাভিনয়ের কল্পনা কবির মনে আদে— এই পাণ্ডলিপির বৈকালী-উত্তর অংশে তাহারও সাক্ষ্য আছে।

১৬-১৬ স্থচনার পরে পরে বন্ধনীবন্ধ সংখ্যা দিয়া যথার্থ পারম্পর্যের নির্দেশ কর-পাণুলিপি -অস্থসারে। পরবর্তী রবীন্দ্র-পাণ্ডুলিপির তালিকায় কর-পাণ্ডুলিপির উল্লেখ প্রথমেই আছে। অস্তত এই গীতচতুষ্টয় সম্পর্কে উহাকেই পূর্বতন আধার-পাণ্ডুলিপি বলিতে হয়। ২৭-সংখ্যক রবীন্দ্রপাণ্ডুলিপিতে নকল করিবার কালে বিক্তাসের বিপর্যয় হইয়াছে, অর্থাৎ কালক্রমের বৈপরীত্য; নকল বলিয়াই কাটাকুটি

18	2	তোমার বীণা স্বামার মনোমাঝে [নির্মলকুমারী: চৈত্র ১৩৩২ ]১৭	8
19	۶۰	['ঝাধারের লীলা' গীতিকবিতার মসীবিলিগু ও তিরম্বত পূর্বপাঠ	
		(८०) २ हेन्य १७७२ ]	२३
20	>>	চপল তব নবীন আঁখি স্থবক ১-২ -উত্তর : ১২ চৈত্র ১৩৩২	¢
22	52	নৃপুর বেজে যায় •••	٠
23	<b>30</b>	লিখন তোমার ধ্লায় হয়েছে ধূলি	٩
24	28	জানি তোমার অজানা [ অনাদি : ১৬ চৈত্র ১৩৩২ ]	ь
27	>4	কি ফুল ঝরিল বিপুল [ অনাদি : ১৭ চৈত্র ১৩৩২ ]	۵
28	১৬	আমার লতার প্রথম মুকুল [ অনাদি ১৭ চৈত্র ১৩৩২ ]	٥,
29	۶۹	কেন রে এতই যাবার ত্বরা [ অনাদি : সকাল ১৮ চৈত্র ১৩৩২ ]	>>
30	56	কাঁদার সময় অল্প ওরে [ অনাদি : সকাল ১৮ চৈত্র ১৩৩২ ]	১২
31	75	বিনা সাজে শাজি [ অনাদি : সকাল ১৯ চৈত্র ১৩৩২ ]	30
33	२०	কি পাই নি তারি [ অনাদি : তুপুর ১৯ চৈত্র ১৩৩২ ]	38

নাই বলিলে চলে। এখন দেখিতে হইবে— আলোচ্য গীতচতুষ্টয়ের যে গান 'গুগোজনের রানী' কর-পাণ্ডলিপি অন্থলারে অগ্রগণ্য, ফাল্কনে তাহা লেখা হয় কি না সন্দেহ। সংকলিত বিতীয় স্ফাপত্রে '১৯' ও '২০'র অন্তর্বর্তী [৩৭] সংখ্যায় দেখা যাইবে ভারতীতে ১০০২ সনের কার্তিক-অগ্রহায়ণে ইহার প্রথম প্রকাশ এবং প্রবাসী পত্রের 'কষ্টিপাথর' অংশে পরবর্তী ফাল্কনেই সংকলন। গানটি ফাল্কনে লেখা ও ছাপা হইলে, ফাল্কনের প্রবাসীতে তাহার সংকলন আশা করা যায় না। প্রচলিত গীতবিতান-০ -অন্থলারে, কবির 'দালিয়া' ছোটো গল্পের আখ্যান লইয়া যে নাটক রচনার সংকল্প ছিল, ইহা তাহারই প্রস্তাবনা-গীত।

অবশিষ্ট তিনটি গানের সহিত পরের ছটি গান যোগ করিয়া একটি শুচ্ছ বাঁধিলে দেখা যায়, 'রবীন্দ্রনাথ ও ত্রিপুরা' (আখিন ১৩৬৮) গ্রন্থ-অন্থসারে সব-ক'টি গান (২৭-সংখ্যক রবীন্দ্র-পাণ্ড্লিপিতে পৃষ্ঠাক্ষ ষথাক্রমে 6, 5, 4, 8 এবং 10) ত্রিপুরায় বা আগরতলায় লেখা। 'রবি' ত্রৈমাসিক অন্থ্যায়ী (একাদশ পাদটীকা স্কুট্রা) আগরতলায় কবির এই স্থিতিকাল ১০-১৪ ফান্ধুন ১৩৩২। এই শুচ্ছের শেষ গানের তারিখটি বিশেষ উপলক্ষ্যের জ্যোতক, র চ না র নয় তাহা জানা যাইবে পরবর্তী রবীন্দ্র-পাণ্ড্লিপির বিবরণে (সংখ্যা ২)। বর্তমান গ্রন্থের '৯৯' পৃষ্ঠা স্কুট্রা।

১৭ দ্রষ্টব্য শ্রীমতী নির্মলকুমারী মহলানবিশ -প্রণীত: বাইশে শ্রাবণ ( ১৩৭৩ ), পৃ ৩৪-৩৭

34	<b>25</b>	<b>শেই ভালো সেই ভালো</b>	•••	•••	; ¢
37	२२	অনেক কথা যাও যে বলে [ অনাদি	: २७ हेन्ज २७७२ ]		১৬
38	२७	দে পড়ে দে আমায় তোরা	• • •	•••	>1
39	२8	পাতার ভেলা ভাসাই নীরে	•••	•••	74
40	<b>૨</b> ¢	এবার এল সময় রে তোর [ অনাদি	: সকাল ২৩ চৈত্ৰ ১৩	<b>૭૨</b> ]	79
43	२७	শেষ বেলাকার শেষের গানে [ অনা	में : २० टेडव २७७२ ]		52
44	२१	व्यार्थक चूर्य नयन চूर्य	• • •	• • •	२२
<b>4</b> 5	२৮	এ পথে আমি যে	• • •	• • •	२७
47	45	আমার প্রাণে গভীর গোপন	•••	• • •	دی
48	9.	হার মানালে ভাঙিলে অভিমান [ অ	नामि: मकान २१ हि	ত্র ১৩৩২ ]	७२
49	৩১	দিন পরে যায় দিন	• • •	• • •	₹8
51	৩২	বাঁধন ছেঁড়ার সাধন হবে	•••	• • •	99
52	೨೨	আপনারে দিয়ে উত্তর-বৈকালী	: ১ বৈশাখ ১৩৩২		<b>0</b> €
53	<b>98</b>	তুমি কি এসেছ মোর বারে তা	দ্ব : ১ বৈশাখ ১৩৩২		৩৬
54	<b>v</b> (	হে চিরন্তন	• • •	•••	७१
55	৩৬	মরণদাগরপারে তোমরা অমর		• • •	<b>9</b>
56	७१	তপস্বিনী হে ধরণী	• • •	•••	२৫
56	৬৮	বিরস দিন, বিরল কাজ	• • •	•••	२७
59	द्	নিশীথে কি কয়ে গেল মনে উ	ভর-বৈকালী : ৭ বৈ	শাখ ১৩৩৩	90
61	8 •	আর রেখো না আঁধারে <sup>১৮</sup>			
62	82	আজি এই মম সকল ব্যাকুল	উত্তর-বৈকালী: বৈ	শাধ ১৩৩৩	84
65	(62	2) ४२ जागांत्र क्य (१ क्य <sup>&gt; २</sup>	,		
67	80	পথে খেতে ডেকেছিলে উত্তর-	বৈকালী: ৮ বৈশাখ	; 000	98

১৮ 'নটীর পূজা' গীতিগুচ্ছের অগুতমরূপে বৈকালীতে সংকলন প্রত্যাশিত। অথচ পূর্ব-বৈকালীতে নাই, উত্তর-বৈকালীতে ছিল কি না নিশ্চিত বলা যায় না।

১৯ নটীর পূজা'র বছখ্যাত গান। 'ভায়ারি' হইতে এক পাতা ছি ড়িয়া ফেলায় উহার পূর্বপাঠের (যেটি উত্তর-বৈকালীতে সংকলিত / বর্তমান সংকলনে '৪৩') মূখামূখি আসিয়া গিয়াছে এবং শেষ শুবকও লেখা হইয়াছে '62' পৃষ্ঠার নিমভাগে।
এই উত্তর পাঠ নাট্যগরিমায় বছপ্রচারিত ও আদৃত হওয়াতেই বোধ করি
স্বতন্ত্র কাব্যে সংকলনের ইচ্ছা কবির ছিল না। কিন্তু পূর্বপাঠ সম্পর্কে সে কথা বলা

68 88	হে মহাজীবন, হে মহামরণ <sup>২</sup> °	•••	88
69 80	বাঁশি যথন থামবে ঘরে ২১	२१ देवनाथ ১७७७	8•
83 89	আশ্রমের হে বালিকা <sup>২২</sup>	१० रेकार्ष [ १७६० ]	85
143 89	আঁখারের লীলা আলোর রঙ্গে বির	<b>एक</b> २७	. 22

চলে না ; এজগুই পূর্ব-বৈকালীতে না দিলেও উত্তর-বৈকালীতে কবি এটি স্মরণ করিয়াছেন—ঈষৎপরিবর্তিত পাঠ পরে ( আশ্বিন ১৩৩৬ ) মহুয়া'র অঙ্গীভূত।

- ২০ নটার পূজা'র গান এই পাণ্ড্লিপিতে এখানে শেষ হয়। কবির জন্মোৎসব-অনুষ্ঠানে,
  শান্তিনিকেতন আশ্রমে, ২৫ বৈশাধ ১০০০ তারিখের সন্ধ্যায় ইহার প্রথম অভিনয়।
  শ্রীমতীর ভূমিকায় শ্রীমতী গৌরীদেবী (বস্থ)। কবি-কর্তৃক ইহার রচনা ও
  নাট্যপ্রস্তুতি সম্পর্কে নানা কথা রবীক্রজীবনীতে ও অন্তর্ক্ত জানা যায়। শ্রীমতী
  নির্মলকুমারী মহলানবিশ বলেন (কবির সঙ্গে যুরোপে / ১০৭৬ / পু ৫): 'দেখতে
  দেখতে তিন দিনের মধ্যে 'নটার পূজা' খাড়া হয়ে উঠল।… তিন দিনের দিন পড়া
  শেষ হলে… রিহার্দেলের পালা। পঁচিশে বৈশাধ সন্ধ্যেবেলা 'কোণার্ক' বাড়ীটার
  চাতালে…' প্রথম অভিনয়, কবির জন্মোংসব উপলক্ষে। / অনুমান হয়, নাটকে
  প্রযুক্ত কতকগুলি গান হয়তো অস্তরের অন্তবিধ প্রেরণায় আগেই লেখা
  হয়; ১০০০ বৈশাধের শান্তিনিকেতন পত্রে 'নববর্ষ' শিরোনামে যে কয়টি গান
  প্রকাশিত তন্মধ্যে রহিয়াছে 'বাঁধন হেঁড়ার সাধন হবে' ও 'তুমি কি এসেছ
  মোর হারে' (বর্তমান সংকলনে '০০' ও '০৬')।
- ২১ বৈকালী-ধৃত ন্দলে লেগা গান-কবিতার পর্যায় শেষ হয় এই 'দিনাবসান' কবিতার থেতাকে। তন্মধ্যে তৃতীয় শুবক কাটিয়া দেন কবি আলোচ্য পাণ্ড্লিপিতে, এরপ দেখা যায়। 'প্রবাসী' পাণ্ড্লিপিতে (পূর্ব-বৈকালী) ত্যাগ করেন শেষ শুবক। আর, পরিশেষ কাব্যে (সম্ভবতঃ উত্তর-বৈকালীতেও) চতুর্থ শুবক বজিত। বৈকালীর বর্তমান সংস্করণে স্ব-ক'টি শুবক যথোচিত পারম্পর্যে সংক্লিত।
- ২২ রচনা 'রোহিত সাগর' পার হওয়ার কালে ইহা জানা যায় বৈকালীর লেখাঙ্কনে। আলোচ্য পাণ্ডলিপির পাঠে 'মাঘের বিদায়ক্ষণে' ইত্যাদি ৬ ছত্র মূল কবিতায় পরে অন্পপ্রবিষ্ট; তাহার স্থান, অবিকল যেমন দেখা যায় পরিশেষ কাব্যে; শেষ পৃষ্ঠায় 'স্থী হও [ করো]… রচি লহ নৈবেছের মালা।' এই ৬ ছত্র তারিখ লেখার পরে সংযোজিত, হয়তো বা ঐ দিনেই রচিত।
- ২০ পুরাতন রচনার নৃতন পাঠ সন্দেহ নাই। বর্তমান স্থচীপত্তে '19' পৃষ্ঠায় ইহার পুর্বস্থান নির্ধারিত। এ সম্পর্কে পুরোগামী ত্রয়োদশ পাদ্টীকা দ্রষ্টব্য। পাণ্ডুলিপিতে

```
145 ৪৭ তদেব: 'লাঞ্চিত' ইংরেজি রূপাস্তর: ১৭ জুলাই ১৯২৬ [১ শ্রাবণ ১৩৩৩ ]
151 ৪৮ সে কোন্ পাগল<sup>২৪</sup> ৮ সেপ্টেম্বর ১৯২৬ [২২ ডাদ্র ১৩৩৩ ]
                                                                84
152 ৪৯ কার চোথের চাওয়ার<sup>২৪</sup> ৯ সেপ্টেম্বর ১৯২৬ [২৩ ভাদ্র ১৩৩৩ ] ৪৬
153 co রয় যে কাঙাল<sup>২৪</sup> ১০ সেপ্টেম্বর ১৯২৬ [২৪ ভাদ্র ১৩৩৩ ]
                                                             89
154 ৫১ ছুটির বাঁশি বাজল যে ১৭ সেপ্টেম্বর ১৯২৬ [৩১ ভাদ্র ১৩৩৩] ৪৮
157 ৫২ [ আকাশ, তোমায় কোন্ ] ২৫ বস্থমতী : তদেব [ ৩১ ভাদ্র ১৩৩৩ ] ৪৯
158 ৫০ তোর ভিতরে জাগিয়া বস্থমতী: ১৮ সেপ্টেম্বর '২৬ [১ আশ্বিন '৩৩ ] ৫০
161 ৫৪ নাই নাই ভয় ১৮ সেপ্টেম্বর ১৯২৬ [১ আশ্বিন ১৩৩৩]
                                                                 62
163 ৫৫ আমার মুক্তি ১৯ সেপ্টেম্বর ১৯২৬ [২ আশ্বিন ১৩৩৩] ৫২
165 ৫৬ সকাল বেলার আলোয় ২০ সেপ্টেম্বর ১৯২৬ [৩ আশ্বিন ১৩৩৩] ৫৩
167 ৫৭ ভালো লাগার শেষ যে [মধুর, তোমার শেষ যে ]
                              २১ (मुल्पेश्वत ১৯२७ [ ८ आश्विम ১७७७ ] (८)
168-69 ৫৮ চাহিয়া দেখো রসের ২৪ সেপ্টেম্বর ১৯২৬ [৭ আশ্বিন ১৩৩৩] ৫৫
171 ৫৯ পুপে, ] তুমি উষার সোনার বিন্দু তদেব [৭ আশ্বিন ১৩৩৩] ৫৬
172 ৬০ আপন গানের টানে ২৫ সেপ্টেম্বর ১৯২৬ [৮ আশ্বিন ১৩৩৩ ] ৫৭
175 ৬১ আপ্নি আমার কোন্খানে ৬ অক্টোবর ১৯২৬ [১৯ আশ্বিন ১৩৩৩ ] ৫৮
177 ৬২ ওগো স্থন্দর, একদা কি জানি ১১ অক্টোবর ১৯২৬ [২৪ আশ্বিন '৩৩ ] ৫৯
        কোথায় ফিরিস ১২ অক্টোবর ১৯২৬ [২৫ আশ্বিন ১৩৩৩ ]
179 ७७
181 ৬৪ আকাশে তোর তেমনি ২০ অক্টোবর ১৯২৬ িত কার্তিক ১৩৩৩ ব
                                                                63
183 ৬৫ পথ এখনো শেষ হল না ২৭ অক্টোবর ১৯২৬ [১০ কাতিক ১৩৩৩]
                                                               ७२
185 ৬৬ দিনের বেলায় বাঁশি ৩০ অক্টোবর ১৯২৬ [১৩ কার্তিক ১৩৩৩ ]
                                                                60
187 ৬৭ পাম্ব পাথীর রিক্ত কুলায় ২৬ ১ নবেম্বর ১৯২৬ [২৩ কাতিক ১৩৩১]
197 ১৮ তব অমূর্ত্ত বাণী [ অরূপ, তোমার বাণী ]
                              २১ नर्वश्व ১৯२७ [ ६ व्याश्वाय ५००० ] ७६
```

পরবর্তী ভাষান্তর বা রূপান্তর (মধ্যে অন্ত লেখা নাই) আছন্ত বর্জনচিহ্নিত; সম্ভবত: সেই পাঠ অপ্রকাশিত: The frolic of light in the sky of darkness etc.

- ২৪ রচনার স্থান-কাল-সহ শ্রীমতী নির্মলকুমারী মহলানবিশের হাতে লেখা।
- ২৫ কাগজের অপর পিঠে মসীবিলেপন-হেতু স্থচনার কয় ছত্ত হুপাঠ্য।
- ২৬ ধুয়ায় ফিরিয়া আসার আগে এই গানের সর্বশেষ পদে একটি পাঠপ্রমাদ তথা

199 ৬৯ বাঁশি আমি বাজাই নি কি ২৪ নবেম্বর ১৯২৬ [৮ অগ্রহারণ ১৩৩০] ৬৬
201 ৭০ ক্ষত ফতি যত ২৫ নবেম্বর ১৯২৬ [৯ অগ্রহারণ ১৬৩০] ৬৭
203 ৭১ যা পেয়েছি প্রথম দিনে তদেব [৯ অগ্রহারণ ১৩৩০]

পূর্ব-বৈকালীর গীতিকবিতাবলীর সাময়িক পত্রে প্রচার তালিকাবদ্ধ হইয়াছে দ্বিতীয় স্ফীপত্রে। অন্যান্ত গানের সাময়িক পত্রে প্রচার তৃতীয় স্ফীপত্রে নাই; পাণ্ডু-পারম্পর্যের ও বর্তমান গ্রন্থের ক্রমিক সংখ্যা -সহ এখানে দেওয়া গেল—

त्रवी ऋगां ठ्विणि २१		সামরিক পা	ত্রে প্রচার	ৰৰ্ডমান গ্ৰছে
86-46	গীতাষ্টক	মাসিক ব	হুমতী। বৈশাখ ১৩৩৪, পৃ ২-৪	84-43
es-er, 50-52	গীতপঞ্চক	সবুজ পত্ত।	कां जिक-ष्यशस्त्रव ১७७७, পৃ ১৮	<b>∂-</b> 3≥
			<b>&amp;</b> \(  \qq                \	D-ee, e9-ev
৬২-৬৪	গান	উত্তরা।	यांच ১७७७, शृ ७१৫-१७	<i>c 2-6 3</i>
<b>66-99</b>	গান	উত্তরা।	ফান্ধন ১৩৩৩, পৃ ৪৩৭-৩৯	<u>৬</u> ২-৬৪
Ge-46	গান	উত্তরা।	टेह्य २०००, शृ ८३२-३२	৬৫- <b>৬৬</b>
90	গান	উত্তরা।	देकार्ष २००८, পृ ७১२	৬৭
95	গান	উত্তরা।	देवनाथ २००८, शृ ८८२	シケ

# প্রাসঙ্গিক রবীক্র-পাণ্ডুলিপি

বৈকালী-সম্পর্কিত রবীন্দ্র-পাণ্ডুলিপি কোথায় কী আছে, যত দূর জানা যায়, তাহার কালক্রমিক তালিকা এথানে দেওয়া গেল—

- ১ রবীন্দ্র-পাণ্ডলিপি। রমা কর -সংগ্রহ। শ্রীমতী রমা মজুমদার (কর) ও শ্রীস্থরেন্দ্রনাথ করের বংশধরগণের সম্পত্তি। আলোকচিত্রে যে গানগুলি দেখা যায়, বর্তমান সংকলনে সংখ্যা: ২০, ২৭, ২৮ ও ৪২।
- ২ রবীন্দ্র-পাণ্ডুলিপি। শ্রীমতী রেবা মহলানবিশ (সরকার) ও শ্রীস্থশোভন সরকার -সংগ্রহ। কলিকাতা। বর্তমান সংকলনের প্রথম ও দ্বিতীয় গান, প্রত্যেকটির

মূত্রণপ্রমাদ দীর্ঘকাল ধরিয়া চলিয়া আসিতেছে: ডালে / রবীক্রসদনের আলোচ্য পাণ্ডলিপি ও ১২৭-সংখ্যক রবীক্রপাণ্ডলিপি তথা মহলানবিশ-সংগ্রহের স্বতন্ত্র রবীক্রপাণ্ডলিপি এই সব-ক'টির অমুসারে উহা 'তালে', বৈকালীর লেখাঙ্কন মনোযোগ দিয়া দেখিলে অক্তরূপ নহে আর উত্তরা মাসিক পত্রেও ঐ পাঠই পাওয়া যায় ১৩৩৩ ফান্তনে। ছাইটি পাঠ, প্রত্যেকটি স্বাক্ষরিত এবং দ্বিতীয় গানের উত্য পাঠই '১৫ ফান্তন ১০০২' এই তারিথ-যুক্ত। আছ্যন্তিক তথ্য না জানিলে এই তারিথ কিন্ত প্রমাদজনক। শ্রীস্থশোভন সরকারের চিঠিতে (৮.৪.১৯৭৪) জানা যায়, শ্রীমতী রেবার সহিত ওই তারিথে (২৭ ফেব্রুয়ারি ১৯২৬/১৫ ফান্তন ১০০২ ফান্তনপূর্ণিমা) তাঁহার বিবাহ হয় এবং ওই সময় রবীক্রনাথ 'ষত দূর মনে পড়ে, আগরতলায় ছিলেন। গান ছ'টি পাঠিয়েছিলেন তাঁর আশীর্বাদ হিসাবে— বিবাহসভায় গান ছটি ছেপে অতিথিদের দেওয়া হয়েছিল।' অর্থাৎ, '১৫' তারিথটি রচনার দিন নয়, ১১ বা ১২ হইতে বোধ করি বাধা নাই। '১৬-১৬' সংখ্যার পাদটীকা স্রষ্টব্য। বাহুল্য হইলেও বলা থাক্, বে-কোনো গানের একটি পাঠের সহিত আর-এক পাঠের হবহু মিল নাই এবং গীতবিতান-ধৃত প্রচল গানের পাঠও পৃথক্। তবে কোনো পাণ্ডলিপিতেই 'দোলে প্রেমের দোলন চাঁপা' গানে অধিক পাঠভেদ ঘটে নাই, বিশেষতঃ গীতবিতানে ও 'প্রবাসী'-পাণ্ডলিপিতে পার্থক্য আসলে নাই।

- ৩ রবীক্স-পাণ্ডুলিপি ২৭। শাস্তিনিকেতন-রবীক্রসদন। ইতঃপূর্বে দেখানো হইয়াছে, ইহাই পূর্বাপর সকল বৈকালীর সমুদয় রচনার বিশেষ আধার-পাণ্ডুলিপি।
- ৪ নটীর পূজা'র প্রাদিক রবীন্দ্র-পাণ্ডলিপি। অভিজ্ঞানসংখ্যা ৪৩ ও ২৫৫ক-২৫৫খ। শাস্তিনিকেতন-রবীন্দ্রদদন। ২৫৫ক সংক্ষিপ্ত অন্তর্ষ্ঠানপত্র বা বিষয়বিবরণ বলা যায়। অন্ত হই পাণ্ডলিপি অসম্পূর্ণ। প্রথম পাণ্ডলিপিতে বর্তমান সংকলনের ৩০ ও ৩৬ / দ্বিতীয়ে ৩০, ৩০ ও ৪৪ / তৃতীয়ে ৩০, ৩৪, ৩৬ ও ৪৪ এই সংখ্যায় নিদিষ্ট গানগুলি দেখা যায়।
- নিটার পূজা। রবীন্দ্র-পাণ্ড্লিপি, প্রায় সম্পূর্ণ। নাটকের স্থচনা হইতে রবীন্দ্রনাথের হাতে পত্রাক্ক (পৃষ্ঠাক্ষ নয়) ৩৪ অবধি; তন্মধ্যে '১৮' '১৯' ও '২৫' অক্কিত পাতা (পৃষ্ঠা নয়) যদি থাকিয়া থাকে, ইহাতে নাই। মৃদ্রণার্থ ব্যবহৃত ইইয়াছিল। বিষয়স্থচনার পূর্বে অন্ত-রচনা-রিক্ত একথানি পাতায় দেখা যায়— শান্তিনিকেতনে '২৫শে বৈশাখ ১৩৩৩' তারিখে কবি ইহা 'পরম কল্যাণীয়া শ্রীমতী গৌরী'কে দেন, 'নটরান্ধ নৃত্য করে নব নব স্থনরের নাটে' এই স্থপরিচিত মান্ধলিক কবিতায়। শান্তিনিকেতনে শ্রীমতী গৌরী দেবী ও শ্রীসন্তোষকুমার ভঞ্জের সংগ্রহ। ইহাতে বর্তমান সংকলনের ৩০, ৩৩, ৩৪, ৩৬ ও ৪৪ সংখ্যায় নির্দিষ্ট গানগুলি দেখা যায়।
- ৬ 'প্রবাদী'-পাঞ্লিপি। শান্তিনিকেতন রবীন্দ্রদদনে শ্রীমতী শান্তা নাগ -কর্তৃক উপস্তত। ইহাকে পূর্ব-বৈকালী বলা হইয়াছে। বর্তমান সংকলনের ১ হইতে ৪০ অবধি সংখ্যায় নির্দিষ্ট, জাহা ছাড়া ৪৪-সংখ্যক গানের আধার-পাঞ্লিপি। '৪০' সংখ্যার শেষ স্তবকটি এই পাঞ্লিপিতে নাই— পূর্বমুদ্রিত (অগ্রহায়ণ ১৩০৩) ও

প্রচারিত (পৌষ ১৩৫৮) বৈকালী হইতে এই সংকলনে গৃহীত; পূর্বমৃত্রিত ও প্রচারিত গ্রন্থে অন্য ন্তবকগুলি যে পাতায় ছিল তাহা পাওয়া যায় নাই। দশম পাদটীকার প্রথম অমুচ্ছেদ দ্রন্থব্য।

- শহলানবিশ-সংগ্রহ। কলিকাতা। শ্রীপ্রশাস্তচন্দ্র মহলানবিশ ও শ্রীমতী নির্মলকুমারী মহলানবিশ খৃষ্টীয় ১৯২৬ সনে কবির য়ুরোপ-ভ্রমণের সন্ধী ছিলেন। ২৭ ধে গীতিকবিতাবলীর স্বতন্ত্র পাণ্ডলিপি ইহাদের সংগ্রহে আছে, ষেগুলির আলোকচিত্র দেখিবার ও বর্তমান সংকলনে প্রয়োজনমত ব্যবহার করিবার স্বযোগ পাওয়া গিয়াছে, সেগুলির সংখ্যা: ৪৫-৪৭ ও ৫৯-৬৮, তাহা ছাড়া ৬৫-সংখ্যক গানের পূর্বপাঠ বা পূর্বাভাস।
- ৮ বন্ধীয় সাহিত্যপরিষদ্-সংগ্রহ। কলিকাতা। বিভিন্ন সময়ে যে গানগুলি ছাপা হয় সবুজ পত্রে, তাহারই সংগ্রহ। তন্মধ্যে যেগুলির আলোকচিত্র দেখিবার স্থোগ হইয়াছে, বর্তমান সংকলনে তাহাদের সংখ্যা: ১ এবং ৫৩-৫৫, ৫৭-৫৮।
- ন রবীন্দ্রপাণ্ডলিপি ১২৭। শাস্তিনিকেতন-রবীন্দ্রসদন। ইহা মহুয়া কাব্যের অক্সতম আধার-পাণ্ডলিপি। সম্ভবতঃ মহুয়ার অক্সীভূত করার উদ্দেশে বর্তমান সংকলনের এই গীতিকবিতাবলি ইহাতে লেখা হয় বা কম-বেশি রূপাস্তরিত হয়: সংখ্যা ৫, ২৬, ৭-১০, ২৯, ৪৩, ৪৬, ৪৭ ও ৬৪। তন্মধ্যে কেবল ৪টি কার্যতঃ মহুয়া কাব্যে গৃহীত—

বৰ্তমান সংকলনে

ভোরের পাথী নবীন আঁথি / চপল তব নবীন আঁথি (৫)
অজানা জীবন বাহিন্তু / জানি, তোমার অজানা নাহি গো
বিবশ দিন, বিরস কাজ / বিরস দিন, বিরল কাজ
আজি এ নিরালা কুঞ্জে, আমার / আজি এই মম সকল ব্যাকুল
এবং প্রচল গীত -রূপে এই পাপুলিপিরই আর-একটি, গীতবিতানে—
আঁধারের লীলা আকাশে আলোক লেখায় লেখায়
(২৯)
—ইহার পরবর্তী বিভিন্ন ছত্রে পাঠভেদ প্রচুর।

২৭ শ্রীমতী নির্মলকুমারী মহলানবিশের হাতের লেখায় ৩টি গান ষেমন আছে আধার-পাণ্ডলিপিতে (বর্তমান সংকলনে সংখ্যা ৪৫-৪৭) তেমনি আর-কতকগুলি গানের নকল তিনি করেন রচনাকালেই স্বতন্তভাবে (সংখ্যা ৪৫-৫৮); তন্মধ্যে শেষ ৪টি ব্যতীত প্রত্যেকটি কবি-কর্তৃক স্বাক্ষরিত— কেবল লক্ষ্য করিবার বিষয় এই ধে, শেষ রচনায় 'বেলা কথন্ যায় গো বয়ে… মূলতানে ॥' এই শেষ কলি ও রচনার স্থান-কাল কবির স্বহস্তে লেখা।

## পাঠভেদ

রবীক্ররচনায়, গানে কবিতায়, পাঠভেদের অস্ত নাই বলিলে বিশেষ অত্যুক্তি হয় না। ভাহার পঞ্জীকরণের শুভস্মচনা হইয়া থাকিলেও, দর্ব স্তরে 'দামগ্রিক' অথবা দর্বাদীণ পাঠপঞ্জীপ্রণয়নের দয়য় স্থযোগ অথবা দন্তাবনা এখন নাই। ১৩৭৪ বৈশাথে দাপ্তাহিক দেশ পত্রের 'দাহিত্যসংখ্যা'য় উত্তর-বৈকালীর সহজ্জভা পুনংপ্রচার উপলক্ষ্যে বৈকালী লইয়া পর্যালোচনা করিয়াছেন শ্রীপুলিনবিহারী সেন; শ্রীশুভেন্দুশেখর মুখোপাধ্যায়ের সহযোগে তিনি উত্তর ও পূর্ব উভয় বৈকালীর বহু পাঠভেদের দৃষ্টাস্কও দিয়াছেন। এ কাজে প্রচুর যত্ন পরিশ্রম অভিনিবেশ ও অভিজ্ঞতা যেমন প্রয়োজন, এজ্ঞ বহুবিধ উপকরণেরও একত্র দমাহার হওয়া চাই। পূর্বোক্ত দেশ পত্রে (পৃ ৫৭) তাহার তালিকা এরপ—

- ১ বিভিন্ন পাণ্ডুলিপি
- ২ প্রাসঙ্গিক সাময়িক পত্র
- ৩ গীতসংগ্রহের বিভিন্ন সংস্করণ
- ৪ স্বরলিপি-সংকলনের বিভিন্ন সংস্করণ
- বিভিন্ন নাটক— নাটকের বিভিন্ন সংস্করণ যাহাতে বৈকালীর গানের

  ব্যবহার
- ৬ এতংসম্পর্কিত নাট্যাভিনয়ের অভিনয়পত্রী
- ৭ বিভিন্ন উৎস্বান্নপ্তানে মুদ্রিত গীতসূচী বা গান
- ৮ প্রাসঙ্গিক বিভিন্ন গ্রন্থের প্রেস-কপি, কবি-কর্তৃক সংশোধিত নির্দেশাদি
- ন গীতশিক্ষার্থীদের সংগৃহীত রবীন্দ্রনাথের হাতে লেখা কাগজ বা 'কার্ড্'। অতঃপর শ্রীপুলিনবিহারী সেন সত্যই ধলেন, সম্ভবতঃ এ তালিকা আরও বাড়ানো যায়। <sup>২৮</sup>

যাহা হউক, বৈকালী সম্পর্কে যাঁহার। সেরপভাবে পর্যালোচনা করিতে প্রস্তুত ও আগ্রহী, দেশ পত্রে ওই আলোচনা ও প্রাথমিক পাঠপঞ্জী তাঁহাদের অবশ্য-দ্রষ্টব্য। বর্তমান গ্রন্থে বিস্তারিত পাঠভেদ- সংকলনের অবকাশ নাই, কেবল দৃষ্টাস্ত-স্বরূপ বৈকালীর কয়েকটি গান-কবিতা সম্পর্কে বিশেষ আলোচনা করা হইল।—

২৮ দেশ পত্রের বক্তব্য-সংকলন, ভাষা নয়।

# পাঠবৈচিত্র্য: নিদর্শন

বলা আবশ্বক যে, বর্তমান সংকলনে ৪০ ও ৪১ সংখ্যা দিয়া নির্দিষ্ট ছুইটি কেবল কবিতা; পরে (ভাদ্র ১৩৩৯) পরিশেষ কাব্যে অভীন্সিত পরিবর্তনে ও শিরোনাম-বোগে গৃহীত—

वास्थयानिका : बास्र्यय ए वानिका

**मिनावमान**: वैनि यथन थांमरव चरत्र

পরিবর্তন সম্পর্কে ৯ ও ১০ -সংখ্যক পাদটীকায় বলা হইয়াছে। দ্বিতীয়টির সাময়িক প্রচার (বছবার) সম্পর্কে জানা যাইবে দ্বিতীয় স্ফচীপত্রের একোনশেষ উল্লেখে।

2

তুইটি সংকলন মূলতঃ কবিতা হইলেও গানে পরিণতি লাভ করে; তন্মধ্যে একটির (বর্তমান সংকলনে পঞ্চম: চপল তব নবীন আঁথি তুটি) প্রথম ন্তবকে ভাষার কোনো পরিবর্তন না করিয়াই হ্বর দেওয়া হয় কিন্তু অপরটি হইতে বিচিত্রভাবে তুইটি গানের (অধিকন্তু একটি স্বাক্ষর-কবিতার) উদ্ভব হয় কিভাবে, তাহা কৌতূহলজনক। গান-তুইটি প্রচল গীতবিতান হইতে উদ্ধৃত করা যাইতেছে।—

# বর্তমান সংকলনে ৩৯ সংখ্যায় নির্দিষ্ট পরবাসী চলে এসো ঘরে

#### गान > :

পরবাসী, চলে এসো ঘরে	>
অমুকৃল সমীরণভরে।	ર
ওই দেখো কতবার হল খেয়া-পারাপার	•
সারিগান উঠিল অম্বরে ॥	8
আকাশে আকাশে আয়োজন,	æ
বাতাদে বাতাদে আমন্ত্রণ।	•
মন যে দিল না সাড়া, তাই তুমি গৃহছাড়া	•
নির্বাসিত বাহিরে অন্তরে।	ь

কবিতার ছত্র ১ ও ২, গানেও সেইরপ। কবিতার তৃতীয় স্তবকের শেষ ৩ ছত্র, গানে ছত্র ৩-৪ রূপে সাজানো হইয়াছে। কবিতার দ্বিতীয় স্তবকের ছত্র ১-২, গানে ছত্র ৫-৬। কবিতার চতুর্থ স্তবকের ছত্র ৩-৪, গানে ছত্র ৭ এবং ওই স্তবকের শেষ ছত্রে 'পরবাসী' যথন 'নির্বাসিত' রূপ ধরিল সেটি এই গানের শেষ ছত্র।

#### गान २:

এসো এসো প্রাণের উৎসবে,	>
<b>एकि</b> नवांश्रूत दिन्त्रदि,	ર
পাথির প্রভাতী গানে এসো এসো পুণ্যস্নানে	૭
আলোকের অমৃতনিঝ রে॥	8
এসো এসো তুমি উদাসীন।	æ
এসো এসো তুমি দিশাহীন।	<b>&amp;</b>
প্রিয়েরে বরিতে হবে, বরমাল্য আনো তবে—	9
দক্ষিণা দক্ষিণ তব করে॥	ь
ত্ৰ:থ আছে অপেকিয়া দারে—	ಎ
বীর, তুমি বক্ষে লহে। তারে।	> 0
পথের কণ্টক দলি এসো চলি, এসো চলি	>>
ঝটিকার মেঘমন্দ্র স্বরে॥	\$2

কবিতার সপ্তম অন্তম ও নবম শুবকই যথাক্রমে এই গানে প্রথম দিতীয় ও তৃতীয় শুবক। গানের প্রথম ছত্ত্রে 'প্রাণের', কবিতায় অন্তরূপ হলে: মাটির / গানের পঞ্চম ও ষষ্ঠ উভয় ছত্ত্রের স্থচনাতেই 'এসো' কিন্তু কবিতায়: ফিরে / গানের দশম ছত্ত্রে 'বক্ষেলহো' হইলেও কবিতায় অন্তরূপ হলে: বরি' লহে। /

এই কবিতার আধারে রবীন্দ্রনাথ একটি স্বাক্ষর-কবিতা লিখিয়া দেন শ্রীশ্রীপতি বস্থকে; উত্তরকালে আনন্দবাজার পত্রিকায় (রবিবার। ২৪ বৈশাথ ১৩৬৮) ও ১৩৭১ সনের '২৫ বৈশাথ' উৎসবপত্রে (বিশ্বভারতী) ইহার লিপিচিত্র প্রকাশিত:

স্বাক্ষর-কবিতা
কোথা যাবে সে কি জানা নেই ?
কোথা আছ ঘর সেথানেই ।
মন যে দিল না সাড়া,
তাই তুমি গৃহছাড়া,
পরবাসী বাহিরে অন্তরে ।
আঙিনার আঁকা আলিপনা
আঁথি তব চেয়ে দেখিল না ।
মিলন ঘরের বাতি
জলে অমলিন ভাতি
সারারাতি জানালার পরে ।

এসো এসো উদাসীন	>>
এদো এদো দিশাহীন	>>
পরবাসী চলে এসে। ঘরে।	20

### २৫ देवभाश। ১७७৮

মূল কবিতার চতুর্থ-পঞ্চম শুবক লইয়। ইহার ছত্র ১-১০। তন্মধ্যে নবম ছত্তের 'অমলিন', মূলতঃ ছিল: অনিমেষ / পূর্ব কবিতার অষ্টম শুবকের প্রথম-দ্বিতীয় ছত্র হইতে এ কবিতার ছত্র ১১-১২; পরিবর্তন হয় পুরোগামী গানের পঞ্চম ও ষষ্ঠ ছত্তের ধাঁচে, অধিকম্ভ 'তুমি' বাজিত হইয়াছে। মূল কবিতার প্রথম ছত্রই স্বাক্ষর-কবিতার শেষ ছত্র।

9

বৈকালীর কয়েকটি গান আশীর্বাদজ্ঞাপক কবিতা রূপে ব্যক্তিগত সংগ্রহে আছে বা সাময়িক পত্রেও প্রকাশিত হইয়াছে। গান হইতে কবিতায় অথবা কবিতা হইতে গানে রূপাস্তর, ইহাতে সময়ের বিশেষ ব্যবধান না'ও থাকিতে পারে অথবা সব কয়টি কবিমানসে মূলতই গান এরূপ হইতে পারে। তুলনীয় বর্তমান সংকলনে—

তৃতীয়: নববধূ

বসস্তের দৃতী তৃমি, ফান্ধনের কুস্থম-উৎসবে
আনন্দের দান তব পরিপূর্ণ করি দিবে কবে ?
বকুলবীথিকাতলে
বিহরিবে লীলাচ্ছলে,
আকুল কুস্তলগদ্ধে বনচ্ছায়া রোমাঞ্চিত হবে।
তৃণহিল্লোলিত পথে মঞ্জীরের কল্লোলগুঞ্জন
কণে কণে ভেঙে দিবে নিকুঞ্জের নিভূত স্থপন।
আকাশে তোমার আঁখি
ক ভূলায়ে লবে ডাকি,

ধেয়ানে দেখিতে পাবে দিকে দিকে হৃদয়বল্পভে।

—ভারতী, চৈত্র ১৩৩২, পৃ ৪৬৭ আগরতলা হইতে প্রচারিত ত্রৈমাসিক রবি পত্রে (চৈত্র ১৩৩২, পৃ ৩৮০) 'গান' শিরোনামে ও বিচিত্র পাঠান্তরে ইহারই প্রকাশ : ছত্র ২, 'দান তব' স্থলে : স্থধাপাত্র / ছত্র ৩-৪, শেষ পদটি না ধরিলে : বঞ্লনিকুঞ্জতলে / সঞ্চরিবে / ছত্র ৬ : চঞ্চল মঞ্জীরঘাতে মৃথর কলোলগুল্পরণ / ছত্র ৭, 'দিবে নিকুঞ্জের' স্থলে : দেবে আরণ্যের / ছত্র ৮-৯ : নয়নপ্রবে হাসি / হিল্লোলি উঠিবে ভাসি / রচনাকালের নির্দেশ : ১৮ই ফান্তন ১৩৩২।

বিতীয়:

### কল্যাণীয়া শ্রীমতী রেবাকে

### षानीकाम

ফাগুনের নবীন আনন্দে	
বাণী মোর গাঁথিলাম ছন্দে।	ર
পথ হতে নিক্ তুলি	9
পাথীর কাকলীগুলি,	8
ভরা হোক্ বকুলের গব্ধে॥	¢
চলে যাক্ মিলনের পাস্থ	৬
দখিনের বাতাদে অশাস্ত।	9
তারি হাতে হোক্ লেখা	ь

পলাশের রাঙা রেখা

স্থভাগিনী, তোমার দীমস্তে।

১৫ [ ১১।১२ १ ] कांजन । ১८७२

# গ্রীরবীন্দ্রনাথ ঠাকুর

>0

অমুরপ আশীর্বচন, স্বাক্ষর ও রচনার তারিথ-সহ ইহার অপর যে পাঠ, তাহাতে বৈকালীর ও গীতবিতানের পাঠের সহিত সাদৃশ্য অধিক। যাহা হউক, উল্লিখিত পাঠের তুলনায় ছত্র ২, 'বাণী মোর' স্থলে: গানখানি / ছত্র ৩: দিলো তারে বনবীথি / ছত্র ৪, 'গুলি' স্থলে: গীতি / ছত্র ৫, 'হোকৃ' স্থলে: হোলো / ছত্র ৬-১০, বর্তমান গ্রন্থের দিতীয় স্তবকের ছত্র ১-৫ -সদৃশ। 'আশীর্বাদ' কবিতার এই দিতীয় পাঠে ধুয়াটির ( দব পাঠেরই প্রথম ছত্র ) পুনরাবৃত্তি হুইবার; অমুরূপ হুই স্থলে বর্তমান গ্রন্থে ওধু: মধুর বদন্তে॥

প্রথম :

বাব্লিকে

ফুট্ল রসের দোলন চাঁপা / হদয়আকাশে।

रेजाि দোল ফাগুনের চাঁদের মতন / স্থায় মাথা সে॥ ইহার দ্বিতীয় পাঠের শিয়রে আছে : আশীর্কাদ / বাব্লিকে / (শ্রীমতী রেব। সরকার।) প্রথম ছত্রে 'ফুটল রদের' স্থলে: দোলে প্রেমের (বর্তমান গ্রন্থে অমুরূপ) / দ্বিতীয় ছত্রে 'মতন' স্থলে: আলোয় ( বর্তমান গ্রন্থে: আলোর )— ইহা ছাড়া পাঠভেদ নাই। গ্রন্থের পাঠ গীতবিতানের সদৃশ, প্রথম পদের পুন:পুন: আবৃত্তি 'গায়কি'র অঙ্গ। ২ ই

২৯ সংকলনের প্রথম ও দ্বিতীয় গানের তুলনা ব্যাপারে, পুরোগামী পাণুলিপির তালিকায় ও বিবরণে দ্রষ্টব্য, সংখ্যা-২।

কোনো কোনো গানের প্রথম ছত্রেই চমৎকারজনক পাঠভেদ ঘটিয়াছে উত্তরকালে। যেমন বর্তমান সংকলনের

- ৫২) 'আমার মৃক্তি গানের স্থরে' পরে হয়: আমার মৃক্তি আলোয় আলোয় / গীতবিতান দ্রষ্টব্য। ইহার পরের অংশেও অনেক পরিবর্তন আছে।
- (ভালো লাগার শেষ যে না পাই' পরে হয়: মধুর, ভোমার শেষ যে না পাই / অক্তান্ত ছত্তে পাঠভেদ নাই।
- ৬৫) रेवकानी-४ूछ 'छव ष्यमूर्ख वांगी

অঙ্গে আমার চিত্তে আমার / মূর্ত্তি পেয়েছে জানি।'

গীতবিতানে: অরূপ তোমার বাণী

অব্দে আমার চিত্তে আমার / মৃক্তি দিক সে আনি।
পরের ত্ইটি ছত্তে ষংসামান্ত আরও পাঠভেদ আছে, পাঠক তুলনা করিয়া
দেখিতে পারিবেন। ব্যালাটন ফুরেডের আরোগ্যভবন হইতে মৃক্তিলাভের
পূর্বেই ইহার যে পূর্বাভাস কবি-মানসে ও লেখনীতে আসে সেটি এখানে
সংকলন করা গেল (প্রথম ছত্তের শক্ষণত সাদৃশ্য প্রথম ও শেষ পাঠে)—

अभार अस्तर भूगी अस्तर अस्तर के क्षेत्र विक मेला स्तर क्रिमेश्न अस्तर के क्षेत्र क्रिमेश्न अस्तर के क्षेत्र क्रिमेश्न अस्तर क्षेत्र

२५६२ २० च्यास्त्रका श्राह्य ইতঃপূর্বে বৈকালী-সম্পর্কিত রবীক্র-পাণ্ড্রলিপির তালিকায় রবীক্রসদনের ১২৭-সংখ্যক রবীক্র-পাণ্ড্রলিপির বিবরণে বলা হইয়াছে, ১০০৫ সনে মহুয়া কাব্যে (আধিন ১০৫৬) সংকলনের উদ্দেশে যথাপূর্ব রূপে অথবা বিচিত্র রূপান্তরে কোন্ কোন্ রচনা কবি উহাতে লিপিব্দ্ধ করেন। কার্যতঃ সবগুলি মহুয়ায় গ্রহণ করা হয় নাই; বেগুলিতে পরিবর্তন করা হইয়াছে, পরিবর্তনের প্রকৃতি ও পরিমাণ একরপ নহে। মুদ্রিত কাব্যগ্রন্থে, যুগপং বৈকালীতে ও মহুয়ায়, বেগুলি আছে, সেগুলির পারস্পরিক তুলনা পাঠক নিজেই করিতে পারিবেন; অহ্য কতকগুলি রচনার রূপান্তরবৈচিত্র্য এ হলে অমুধাবনের যোগ্য। ৩০ রবীক্র-পাণ্ড্রলিপি ১২৭ - আধারিত বর্তমান সংকলনের—

30

আমার লতার প্রথম মুকুল:

আমার প্রাণের জাগরণী দৃতী
চেয়ে আছে মোর পানে,
শুধায় আমারে, "এসেছি এ কোন্থানে ?"
এসেছ আমার জীবনলীলার রঙ্গে,
এসেছ আমার তরল ভাবের ভঙ্গে,
এসেছ আমার স্বরতরঙ্গানে
জাগাতে সে কথা যাহা কেহ নাহি জানে ॥
আমার প্রাণের জাগরণী দৃতী
প্রভাতআলোকমাঝে
শুধায় আমারে, "এসেছি এ কোন্ কাজে ?"
এসেছ টুটতে কাজের জটিল গ্রন্থি,
বিরস চিন্তে অমৃত তুলিতে মন্থি',
বাজাতে বাঁশরী প্রেমাত্র ছনয়ানে,
মিলাতে তোমারে আমার আয়ানানে ॥

৩০ ১২৭-সংখ্যক রবীন্দ্র-পাণ্ডলিপির বিবরণে বর্তমান বৈকালীর ৫, ৭, ৮, ৯, ১০, ২৬, ২৯, ৪৩, ৪৬, ৪৭ ও ৬৪ সংখ্যার নির্দেশ। তন্মধ্যে ৫, ৮, ২৬ ও ৪৩ মহুয়া কাব্যে গৃহীত আর ৭ ও ৯ অঙ্ক-যুক্ত রচনায় কোনো পরিবর্তন হয় নাই। স্বতন্ত্র আলোচনার বিষয়— '১০', '৪৬', '৪৭', '৬৪' ও বিশেষভাবে '২৯'।

এটা ভূমিকায় [মহ্য়া'র] যেতে পারে / কবি-কর্তৃক এই মস্ভব্য লেখার পরেও আছম্ভ রচনা বর্জনচিহ্নে লাঞ্চিত। রূপান্তর: ২৫ শ্রাবণ ১৩০৫

86

কার চোথের চাওয়ার:

চোথের চাওয়ার হাওয়ায় দোলায় মন!
তাই কি হৃদয় বিকল সকল থন?
তাই হাসি তোর অশ্রধারায় ধোওয়া,
ভাবনা কি তাই মৌনছায়ায় ছোওয়া?
ভাষায় কি তাই রাগিণীর আবরণ?
কেমন বিকল আছিস সকল থন!

পরশমণির পরশে পরাণ জাগা, তাই তো তোমার স্বপ্ন সোনায় লাগা। দিনের প্রবাহে প্রহরলহরীতলে ঝিলিমিলি করি স্বর্ণঝলক ঝলে কালোয় আলোয় কাঁপায় জাথির কোণ,

কেমন বিকল আছিস সকল খন।
ছন্দের প্রকৃতিগত পরিবর্তন লক্ষণীয়। নৃতন ছন্দে মাত্রাপ্রণের জন্তও বহু পরিবর্তন।
পাতুলিপি-পর্যালোচনায় ধারণা হয় যে, রচনা : ২৭—২৮ শ্রাবণ ১৩৩৫। অর্থাৎ, ২৭

রয় যে কাঙাল শৃত্য হাতে:

বা ২৮ যে কোনো তারিখে।

নিংস্ব যে রয় শৃষ্ঠ পাত্রে
দিনের শেষে
সেই দেখা দেয় নিশীধ রাত্রে
রাজার বেশে।
দিবসে মান সে রাজপথে তারে
মৌন দেখি,
তিমিরআসনে চম্বতে তার
দীপ্তি একি!
পুশ্পমুক্ট কে পরায়ে দেয়
তাহার কেশে।

89

দিনে তার কাজে হার ছিল না বে
তাই তো হেলা,
বিজয়মন্ত্র বাজায় তন্ত্রী
রাতের বেলা।
তন্ত্রাবিহীন অন্ধকারের
বিপুল গানে
মন্ত্রিয়া উঠে গৌরববাণী
তাহার প্রাণে,
তারার আলোয় কে তাহারে ছোঁয়
বক্ষে এসে॥

[ २१८०२४ स्थावन २७७৫]

ছন্দোভেদ ইহাতেও লক্ষ্য করিতে হইবে; অনেক পাঠভেদের কারণ তাহাই। পাঞ্লিপিতে, পূর্ব সংকলিত রচনার অব্যবহিত পরে ইহার স্থান। ছটিতেই উত্তর-বৈকালী -ধৃত মূল রচনার স্থান-কাল দেওয়া থাকিলেও, পরিবর্তনের কাল ২৭—২৮ শ্রাবণ ইহাতে সন্দেহ নাই।

পরবর্তী সংকলন দ্বিধাভিন্ন; আলোচ্য পাণ্ডুলিপিতে প্রথমটি লাঞ্ছিত এবং দ্বিতীয়টি 'গ্রাহ্ন' পাঠ— কেননা, বর্জনচিহ্ন নাই।

₹8

পান্থ পাশীর রিক্ত কুলায়:

পাস্থ পাথীর রিক্ত কুলায়
কান পেতে রয় ডালে
পলাতকার পথের পানে
পাতার অস্তরালে।
বাসায় ফেরা ডানার শব্দ
নিঃশেষে সব হল স্তর্ধ,

সন্ধ্যাতারার মন্ত্র উঠে জিলেক বিদ্যালয়ক

ইত্যাদি

**मिर्**नत्र विमायकारम ।

ষিতীয় শুবকে পরিবর্তন নাই, কোনো শুবকেই 'ধুয়া' লেখা হয় নাই, শেষ ছত্র : বেণুশাখার তালে ॥ / পরিবর্তিত পাঠের রচনা মনে হয় : ২৬—২৭ অগস্ট্ ১৯২৮ বা ১০—১১ ভাদ্র ১৩৩৫। স্বটা বর্জনচিহ্নিত।

## গ্রাহ্থ পাঠ

পাস্থ পাশীর রিক্ত কুলায় আমি
কান পেতে রই ডালে।
সকালবেলায় নিল সে বিদায় সাগরতীর্থগামী
গিরির অস্তরালে।
ঘর-ফেরা যত ডানার শব্দ গুণি,
শেষ হয়ে যায়, আর কিছু নাহি শুনি;
সন্ধ্যাতারার মন্ত্রজপের সময় ঘনায়ে এল
দিনের বিদায়কালে॥

চন্দ্রমা দিল রোমাঞ্চে চঞ্চলি'
তরঙ্গ সিন্ধুর।
বনচ্ছায়ার রক্ষ্ণে রক্ষে মাণিক্য পড়ে গলি'
জ্যোৎস্নার বিন্দুর।
স্বপ্তিবিহীন অসীম শৃত্যতা যে
সকল প্রহর হুহুক্ষারিয়া বাজে
বক্ষে আমার; বৈরাগী এই রাতের হাওয়ার স্থরে
পল্লবকলতালে॥

পরবর্তী আলোচনা যে কবিতা বা গান লইয়া, তাহার উদ্ভবের ও ক্রমপরিণভির ইতিহাস বিচিত্র। দ্বিতীয়, বিশেষতঃ তৃতীয় স্থচীপত্রে (পৃ 19 ও 143 / পারস্পর্যে ১০ ও ৪৭), যেমন ইহার উল্লেখ, তেমনি ত্রয়োদশ ও ত্রয়োবিংশ টীকায় ইহার বিষয় বলা হইয়াছে। ২৭-সংখ্যক রবীন্দ্রপাণুলিপির '19' পৃষ্ঠার পাঠ উদ্ধার করা দায় নাই তবে এটুকুই অন্থমান করা চলে যে, এই পাঠ 'প্রবাসী'-পাণ্ড্লিপির অন্থর্মপ (বর্তমান গ্রন্থে '২৯' সংখ্যায় সেই পাঠই দেখা যায়), পক্ষান্তরে ইহার বীজরপ কী ছিল এবং পরে পরে কী পরিবর্তন হইল স্ক্রম্পষ্ট রবীন্দ্রলেখাঙ্কনে বিশ্বত। যথা—

**ফ) স্বাক্র-কবিতায় পূর্বাভাস** 

उत्तरिक जीतर अवस्त्र अस्तरिक - त्यास, इत्यान जीतर अत्या इत्या हुत्यान अस्तरिक जीतर हत्या ह्यास, अक्तरिक जीतर क्यार उत्तरिक.॥

Grannager 12 (2) moor 20 000000 D

—শ্রীমতী লীলা মজুমদারের স্বাক্ষরসংগ্রহ

- থ) রবীন্দ্র-পাণ্ডুলিপি ২৭, পৃ 19-ধৃত রূপ। পাঠোদ্ধার হয় নাই। রচনা ১২ চৈত্র ১৩৩২ তারিখের আগে অথবা ওই দিবসে।
- গ) 'প্রবাসী'-পাণ্ডুলিপি তথা বর্তমান গ্রন্থ -ধৃত রূপ। ২৯ বৈশাখ ১৩৩৩ তারিখে বা অব্যবহিত পূর্বে প্রবাসী-সম্পাদকের উদ্দেশে প্রেরিত। এই পাঠ পূর্বোক্ত প্রচ্ছন্ন বা অবলুপ্ত পাঠের প্রতিরূপ না হইলেও অমুরূপ হইতে পারে।

ঘ) পরিবভিত রূপ

--রবীন্দ্র-পাণ্ড্লিপি ২৭, পু 143

'145' পৃষ্ঠা -ধৃত লাঞ্চিত এবং সম্ভবতঃ বজিত / অপ্রকাশিত ইংরেজি রূপান্তরের রচনা : ১৭ জুলাই ১৯২৬ বা ১ প্রাবণ ১৩৩০। বাংলা রচনা যে ওই দিনে বা উহার অব্যবহিত পূর্বে তাহা অমুমান করা চলে।

ঙ) প্রচল গীতরূপ

वाधारतत नीना व्याकारण व्याकाक निया त्राधारत नीना व्याकाक किन मुम्हण । व्यक्तरभत्र नीना व्याकाना क्रिन सम्हण । व्यक्तरभत्र नीना व्याकाना क्रिन रत्रथाम रत्रथाम,

স্তব্ধ অতল খেলিছে তরল তরঙ্গে। আপনারে পাওয়া আপনা-ত্যাগের গভীর লীলায়,

মূর্ত্তির লীলা মূর্ত্তিবিহীন কঠোর শিলায়

শাস্ত শিবের লীলা যে প্রলয়ক্রভঙ্গে॥ শৈলের লীলা নির্ঝরকলকলিত রোলে,

শুদ্রের লীলা কত না রঙ্গে বিরঙ্গে। মাটির লীলা যে শস্তের বায়ু-হেলিত দোলে,

আকাশের লীলা উধাও ডানার বিহঙ্গে। সর্গের খেলা মর্ত্ত্যের মান ধূলায় হেলায়। তৃঃখেরে লয়ে আনন্দ খেলে দোলন-খেলায়,

শোর্য্যের খেলা ভীক্র মাধুরীর আসঙ্গে॥

- त्रवीक्षभाष्ट्रनिभि ১२१, भू 57

>>

রচন। ৭—১০ ভাদ্র ১৩৩৫ তারিথে, কেননা এই খসড়া-পাণ্ডুলিপিতে পূর্ববর্তী রচনায় তারিথ ২৩ অগস্ট্ ১৯২৮ বা ৭ ভাদ্র এবং পরবর্তী রচনার তারিথ : ২৬ অগস্ট্ ১৯২৮ বা ১০ ভাদ্র ১৩৩৫। মূলতঃ মহুয়া কাব্যে সংকলনের উদ্দেশে রচিত মনে হয়। গীতবিতান-ধৃত প্রচল গীতরূপে একটি মাত্র পাঠপরিবর্তন চতুর্থ ছত্ত্রে, 'খেলিছে' স্থলে : খেলায় / একাদশ ছত্ত্রে একটি পাঠপ্রমাদ-জনিত মূদ্রণপ্রমাদও সম্ভবতঃ আছে—'ভানার' স্থলে : ভাষার / তাৎপর্যের দিক দিয়া অনাহুত বা অবাঞ্চিত মনে হয়।

পাঠবৈচিত্র্যের সংকলন শেষ করা গেল। কৌতৃহলী তথা কাব্যজিজ্ঞান্থ পাঠক বর্তমান গ্রন্থ, গীতবিতান, মহুয়া, প্রাসন্ধিক অক্সান্ত নাটক / কাব্য মিলাইয়া দেখিলে আরও অনেক পাঠভেদ দেখিতে পাইবেন। নিজের লেখা নিজে নকল করিতে গিয়াও কবি পাঠ বদল করেন নাই, এ দৃষ্টান্ত বিরল হইতে পারে। 'এই পাঠ অথবা এই ছত্র ভালো' 'এটি ভালো নয়', আশু এরপ সিদ্ধান্তের লোভ সংবরণ করিলে হয়তো দেখা ষাইবে— বিভিন্ন পাঠের প্রয়োগ বা প্রয়োজন বিচিত্র আর বিশেষ উপযোগিতাও অবশ্যই রহিয়াছে।

॥ সংকলন-স্ত্র ॥ বর্তমান সংকলনের অর্থাৎ অথগু বৈকালীর ক্রমিক অঙ্ক -অমুষায়ী— ১-১৯, ২১-৪০ 'প্রবাসী'-পাণ্ডুলিপি হইতে।

২০, ৪০ (শেষ-স্তবক) - ৪৮, ৫১-৬৪ ও ৬৬ পূর্বমৃদ্রিত বৈকালী হইতে 
যাহার মূলাধার 'এল্যুমিনিয়মের পাতে' কবির হাতের লেখা।
৬৫, ৬৭, ৬৮ ও গ্রন্থপরিচয়-ধৃত ৬৫'র পূর্বাভাস যে আদর্শ হইতে
সেগুলি রহিয়াছে মহলানবিশ-সংগ্রহে।

৪৯ ও ৫০, ব্যবহারযোগ্য অন্য রবীক্রপাণ্ডলিপির অসম্ভাবে, ১৩১৪ বৈশাথে মাসিক বস্থমতী পত্রে মৃদ্রিত লিপিচিত্র হইতে ঈষং বর্ধিতাকারে গৃহীত।

সর্বশেষ তুইটি গান (৬৭ ও ৬৮) ধাতৃপত্রে লেখা উত্তর-বৈকালীতে আদৌ না থাকিলেও, স্বাধিকারে উহাতে তাহাদের স্থান ও মর্যাদা সম্পর্কে সংশয়ের অবকাশ নাই। কেননা, বৈকালী-রচনাপর্বের সহিত ওই তুটি গান অঙ্গাঙ্গীভাবে যুক্ত এবং সংগীতে যেমন সম বা শম, সর্বশেষ গানে তেমনি সমুদায় বৈকালীর অভীষ্ট পরিণাম বা স্থসংগত সমাপ্তি।

॥ স্বীকৃতি ॥ সম্পূর্ণ 'প্রবাসী'-পাণ্ডলিপি পাওয়া গিয়াছে ও ব্যবহারের স্থযোগ হইয়াছে শ্রীমতী শাস্তা নাগের সৌজন্তো।

> বৈকালীর বহু গানের প্রতিচিত্রণ শ্রীমতী নির্মলকুমারী মহলানবিশের সৌজন্যে সম্ভবপর হইয়াছে।

> বহু গানের রচনাকাল জানিবার স্থযোগ দেন শ্রদ্ধেয় অনাদিকুমার দন্ডিদার। 'নটীর পূজা'র রবীদ্রপাণ্ডলিপি দেখিবার স্থযোগ দেন শ্রীসন্ডোষকুমার ভঞ্জ ও শ্রীমতী গৌরীদেবী।

> গ্রন্থসম্পাদনায় বহু তথ্যের সন্ধান দিয়াছেন শ্রীপুলিনবিহারী সেন এবং শ্রীশোভনলাল গঙ্গোধ্যায়।

সম্পাদনা ও গ্রন্থপরিচয়-রচনা : শ্রীকানাই সামস্ত

# বর্ণামুক্রমিক সূচীপত্র

স্চনা	সংখ্যা	পৃষ্ঠা
অনস্তের বাণী তুমি	•	•
অনেক কথা যাও ষে ব'লে	<b>&gt;</b>	36
আকাশ, তোমায় কোন্ রূপে মন	68	৬১
আকাশে তোর তেম্নি আছে ছুটি	<b>&amp;</b> 5	90
আজি এই মম সকল ব্যাকুল	80	<b>¢</b> 8
আঁধারের লীলা আকাশে আলোক-লেখায়	[ २२ ]	>>5
আঁধারের লীলা আকাশে আলোক লেখায় লেখায়	[ 49 ]	>>0
আঁধারের লীলা আকাশে আলোকলেথায় লেথায়	२ व	৩২
আঁধারের লীলা আলোর রঙ্গ বিরক্তে	[ २२ ]	225
আধেক ঘুমে নয়ন চুমে	<b>२</b> २	२৫
আপন গানের টানে, আমার	<b>«</b> 9	८७
আপনহারা মাতোয়ারা	8 2	¢9
আপনারে দিয়ে রচিলি রে কি এ	<b>७</b> €	96
আপ্নি আমার কোন্খানে	<b>e</b> b	90
আমার প্রাণে গভীর গোপন	٥)	<b>98</b>
আমার প্রাণের জাগরণী দৃতী	[ > ]	206
আমার মৃক্তি গানের স্থরে	<b>e ર</b>	<b>৬</b> 8
আমার লতার প্রথম মুকুল	> •	১২
এ পথে আমি যে গেছি বার বার	२७	২৬
এবার এল সময় রে তোর	>>	<b>2</b> 5
এসো আমার ঘরে	२৮	95
এসো এসো প্রাণের উৎসবে	[ 😮 ]	> 8
ওগো জলের রাণী	₹•	२२
ওগো স্থনর, একদা কী জানি	63	95
কাঁদার সময় অল্প ওরে	>>	78
কার চোথের চাওয়ার	85	¢b
কী পাই নি তারি হিসাব মিলাতে	78	>9

की मून वित्रम विश्न व्यवकारत	>	•
কেন রে এতই যাবার দরা	32	<b>3</b> /
কোণা যাবে সে কি জানা নেই	[ <0 ]	) o {
কোথায় ফিরিস পরম শেষের অম্বেষ্ট	<b>⊘•</b>	9:
ক্ষত ষত ক্ষতি যত	৬৭	·
চপল তব নবীন আঁথি ছটি	e	97
চাহিয়া দেখো রসের স্রোতে স্রোতে	_	•
চোখের চাওয়ার হাওয়ায় দোলায় মন		৬৭
ছুটির বাঁশি বাজ্ল যে এ	[ 88 ]	> >
জানি, তোমার অজানা নাহি গো	86-	<b>&amp;</b> 0
	<b>b</b>	20
তপিষ্বনী হে ধরণী, ওই যে তাপের বেলা আদে	₹¢	२৮
তব অমূর্ত্ত বাণী	<b>&amp;</b> @	99
তুমি উষার সোনার বিন্দু	<b>(</b> 5	৬৮
তুমি কি এসেছ মোর দ্বারে	৩৬	८०
তোমার অরূপ বাণী	[ ७৫ ]	> 9
তোমার বীণা আমার মনোমাঝে	8	8
তোর ভিতরে জাগিয়া কে যে	• 9	৬২
मिन পরে যায় দিন	₹8	२ १
দিনের বেলায় বাঁশি তোমার	<b>&amp; ©</b>	90
দে পড়ে দে আমায় তোরা	۵۹	\$ 5
দোলে প্রেমের দোলন চাঁপা	>	2
নাই, নাই ভয়, হবে, হবে জয়	<b>«</b> >	৬৩
निनीएथ की करा राज भरन	٠.	<b>9</b> 9
নিঃস্ব যে রয় শৃক্ত পাত্তে	[89]	۵۰۵
নৃপুর বেজে যায় রিনিরিনি	<b>&amp;</b>	<b>b</b>
পথ এখনো শেষ হল না	৬২	98
পথে যেতে ডেকেছিলে মোরে	<b>७</b> 8	৩ ৭
পরবাসী চলে এসো ঘরে	<b>ల</b> పె '	·
পরবাসী চলে এসে ঘরে	[ هې ]	82
পাতার ভেলা ভাসাই নীরে	>> [	3.0
পান্থ পাথীর রিক্ত কুলায় আমি	[ %8 ]	<b>२</b> ०
	r 1	222

পাহপাৰীর রিক্ত কুলায় কান পেতে রয় ভালে	[ *8 ]	>>•
পাছপাৰীর রিক্ত কুলায় / গহন গোপন ডালে	₩\$	74
काछत्वत्र नवीन जानत्म / गानगानि	2	2
ফাগুনের নবীন আনন্দে / বাণী মোর	[ * ]	>•4
ফুট্ল রদের দোলন চাপা	[ > ]	>•4
বনে যদি ফুট্ল কুস্থম	29	ల•
বসস্তের দৃতী তুমি		> 4
বাঁধন-ছেঁড়ার সাধন হবে	99	૯૭
বাঁশি আমি বাজাই নি কি	<b>9</b> 9	96
বাঁশি যথন থামবে ঘরে	8 •	8 €
বিনা সাজে সাজি দেখা দিয়েছিলে কবে	20	> 0
বিরস দিন, বিরল কাজ	২৬	२३
ভালো লাগার শেষ যে না পাই	<b>48</b>	৬৬
মরণসাগরপারে তোমরা অমর	96	8 >
মাঘের বিদায়ক্ষণে	8 \$	<b>68</b>
যা পেয়েছি প্রথম দিনে	<b>&amp;</b>	<b>b</b> •
রয় যে কাঙাল শৃ্ন্য হাতে	89	63
লিখন তোমার ধূলায় হয়েছে ধূলি	9	>
শেষ বেলাকার শেষের গানে	२১	₹8
সকাল বেলার আলোয় বাজে	<b>C</b> S	৬৫
দে কোন্ পাগল যায় পথে তোর	8 €	<b>«</b> 9
সেই ভালো সেই ভালো	> €	59
হার মানালে ভাঙিলে অভিমান	৩২	96
হে চির-নৃতন আজি এ দিনের	৩৭	8 •
হে মহাজীবন, হে মহামরণ	88	(5

গ্রন্থ কাষ্ট্র প্রায় প্রত্যার পৃথক্ ক্রমিক সংখ্যা নাই বন্ধনীবন্ধ সংখ্যায় পূর্বপাঠের নির্দেশ

# বিশ্বভারতী গ্রন্থনবিভাগের পঞ্চাশৎবর্ষ-পূর্তি উপলক্ষে প্রকাশ : ৩২ আয়াঢ় ১৩৮১ : ১৭ জুলাই ১৯৭৪

© বিশ্বভারতী ১৯৭৪

প্রকাশক রণজিৎ রায় বিশ্বভারতী। ১০ প্রিটোরিয়া স্ত্রীট। কলিকাতা ১৬

মূত্রক শ্রীস্থনারায়ণ ভট্টাচার্য তাপদী প্রেদ। ৩০ বিধান দরণী। কলিকাতা ৬ Barcode: 4990010228092
Title - Baikali
Author - Tagore, Rabindranath
Language - bengali
Pages - 130
Publication Year - 1926



Barcode EAN.UCC-13